सहर्ष स्वीकार करताहूं। पुत्र! अपने स्नातकों और ब्रह्मचारियों की भेजी हुई किसी वस्तु का मैं अनादर नहीं किया करता। परमात्मा तुम्हें आनन्दित रक्खें।

मङ्गलाभिलाषी

'श्रद्धानन्द'

यह सच्चा स्वप्न टूटा। उठकर डब्बा पार्सल करने को निकाला। जब दोपहर को डाकका समय हुआ तो मनमें संकोच हुआ कि स्वामी जी के सामने तू कल का बच्चा है, इतने बड़े २ डाक्टरों के होते हुये तू क्या दवाई भेजेगा! बस दवाई न भेज सका। न पत्र लिखा और न उत्तर पाया!

यदि संकोच त्यागकर भेंट कर देता तो मुझे पूर्ण निश्चय है कि आपका अन्तिम पत्र मुझे ठीक स्वप्न जैसाही मिलजाता हाय! मैंने तब भेंट क्यों न चढ़ाई!

पता नहीं जीवनकाल में केवल मात्र संकोच वश न दी हुई भेंट अब आप स्वीकार करें या नहीं? डरते२ अब इस अनोखी राजेश्वरी की भेंट आप को चढ़ाता हूं।

इस में आपके ही विचार भरकर हिन्दुजाति के जीवन का मार्ग स्पष्ट करके दिखाया है।

मेरे जीवन के प्रकाशस्तम्भ, ! पूज्य कुलपति जी!

आप किसी स्नातक व ब्रह्मचारी की किसी वस्तु का अनादर नहीं करते इसे भी स्वीकार कर लेंगे यह मुझे मेरा दिल कहता है।

आपका लोकातीत् भक्त

तुच्छ पुत्र

विद्याधर विद्यालंकार

अपराधी

(१)

आज दिल्ली में बड़ी धूमधाम है। सारा नगर, फूल, पत्तों और झण्डियों से सजाया गया है। दुकानदारों की दुकानें अपनी जगमगाहट से लोगों की आँखे खींच रही हैं। अयोध्या में राम के आगमन से पूर्व राजमार्ग सुगंधित जल से धोये गयेथे। आज उसके अभाव में सड़कों पर तारकोल फैला-कर धूल का उड़ना बन्द करने का यत्न किया गया है। गंधियों की दुकानों और दिल्ली के छैल छबीले लोगों के कपड़ों में लगे हुये इतर और सुगन्ध से दिल्ली का वायुमण्डल सुगंधित होरहा है। लोग प्रसन्नता से बाज़ार में घूम २ कर शोभा निरीक्षण कर रहे थे कि इतने में पुलीस, फ़ौज और घुड़सवार एकदम सड़कों के दोनों ओर पंक्ति बाँधकर आ खड़े हुए। 'हटो निकलो' की ध्वनि होने लगी। थोड़ी देर में 'चाँदनी चौक' का विशाल मार्ग लोगों से सूना हो गया। पीछे दुकानें, आगे सेना और रिसाला और बीच में सड़क सूनी थी। सब मनुष्य तुरन्त लपक कर आस पास की मकानों पर चढ़गये। 'चाँदनी चौक' के मकानों की छतें दिल्ली और बाहर के प्रान्तों के नर-नारियों से खचाखच भर गईं। तिल धरने को जगह न बची। कोमल रमणियाँ गरमी से व्याकुल हो उठीं तो भी कोई

टस से मस न हुई। सारी जनता उत्सुकता से एक विराट पर्व की प्रतीक्षा करने लगी। इतने में बिगुल बजे, बैंड की सुमधुर ध्वनि आकाश में व्याप्त हो गई। दुर्ग की तोपों के निनाद से आकाश मण्डल विदीर्ण होने लगा। फ़ौजी लोग हथियार संभाल सड़क की ओर सतर्क हो गये। लोगों को विश्वास हो गया कि भारत सम्राट के प्रतिनिधि वायसराय लार्ड हार्डिंग महोदय किले से चल पड़े हैं। आज दिल्ली में उनका अभिषेक होगा। युधिष्ठिर महाराज की दिल्ली आज हार्डिंग का अभिनन्दन करेगी।

क्रमशः सेना के घुड़सवार नेजे उठाये आगे बढ़े। उनके पीछे नंगी तलवारें निकाले हुए रिसाला आया। फिर बैंड बाजा और पीछे फिर नंगी तलवारों का रिसाला चला। उस के अनन्तर एक विशालकाय स्वर्ण रजत और मणिमुक्ता के हारों से सुशोभित हाथी की पीठ पर एक महामूल्य हौदे के अन्दर विराजमान लार्ड हार्डिंग और लेडी हार्डिंग ने जनता को दर्शन दिये। श्रद्धा और राजभक्ति से दोनों ओर के नर नारी भारत के इस 'राजा' को सिर झुका रहे थे। लार्ड और लेडी हार्डिंग बड़े प्रेम से मुसकराते हुये और गौरव पूर्ण आँखों से दोनों ओर देखते हुए अपने हाथ प्रजा के अभिवादन का प्रत्युत्तर देने को लगातार उठाते जा रहे थे। वे हाथ और टोपी को उठाने से यद्यपि थक गये थे तो भी वे उसको बंद करते नहीं दीखते थे। उनका प्रेम प्रजा पर निःसन्देह अधिक था। हाथी चाँदनी चौक के घण्टाघर भी न पहुंचा था कि एकदम

शोर मचा। फौज और पुलिस ने सब मकानों को घेर लिया। बैंड बजना बंद हो गया, तोपें मूक हो गईं। घण्टों तक भूखे प्यासे लोग मकानों पर ही घेर कर रोक लिये गये। तलाशी आरम्भ हो गई। जलूस बीच में ही वापिस हो गया। हे भगवन! यह क्या हो गया? क्या घटना घटी जो एकदम प्रसन्नता के स्थान पर शोक और उदासीनता छा गई! किसी प्रकार लोगों को विदित हुआ कि लार्ड हार्डिंग पर किसी दुष्ट ने बंब फेंका है और लार्ड और लेडी घायल हुए हैं! सचमुच युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ दुर्योधन से न सहा गया!

(२)

उस दिन दिल्ली के बंम केस का फैसला सुना दिया गया। दीनानाथ सरकारी गवाह बना। राशबिहारी नाम का बंगाली युवक इस हत्याकाण्ड का प्रमुख माना गया। कितनों को फाँसी हुई। अनेक काले पानी पहुंचाये गये कुछ २ साल की क़ैद तो अनेकों के भाग्य में पड़ी। यह निश्चय था कि जज ने ठीक फैसला दिया है। भगवान् जानते थे कि मास्टर अमीर चन्द निरपराधी हैं। लनीफ़ हुसेन सबइन्स्पेक्टर पुलिस ने ही मास्टर जी के विरुद्ध सारा षड्यन्त्र रचा था। मास्टर जी को राजा के न्यायालय से फाँसी का दण्ड मिला था। फाँसी मिलने तक मास्टर जी जेल में जिस प्रकार रक्खे गये ठीक उसी प्रकार मास्टर जी की धर्मपत्नी ने दिन गुज़ारे। मास्टर जी को दो कम्बल सोने ओढ़ने को दिये, उनकी पत्नी ने भी दो काले कम्बलों में ज़मीन पर सो कर गुज़ारा किया। वे कच्ची

रोटी तेल वाली दाल से खाते थे, तो वह भी वही भोजन करने लगीं ! वे गरमी की ऋतु में तंग मच्छरों वाली कोठरी में रक्खे गये तो वह भी छत पर न सो कोठरी के दरवाज़े बंद करके सोने लगी ! अब फाँसी के दिन समीप आने लगे, बेचारीने एक समय खाना बंद कर दिया । जब सर्वथा फाँसी की घड़ी आ पहुंची, उनकी पत्नी तीन दिन से निराहार थी ! चौथे दिन ९ बजे दिन के मा० अमीरचन्द जी को फाँसी मिली ! ठीक नौ बजे देवी ने प्राण छोड़ दिये ! मास्टर जी बच सकते थे परन्तु भोले मास्टर जी को क्या मालूम था कि विश्वासघाती लतीफ़-हुसेन उन से ही सब भेद पूछकर उन पर ही वार करेगा । वे यवन के विश्वासघात से न बच सके ।"आस्तीन के छिपे साँप" ने डंक मार ही दिया !

(२)

लतीफ़हुसन के घर में आज बड़ा उत्सव है । सरकार कि उसने दिल्ली बम केस में बड़ीसहायता की थी, सरकारने उसकी पद वृद्धिकर दीहै। उसे इन्सपेक्टर पुलिस बनादिया है।आज उस के घर बड़े शामियाने के नीचे अतिथियोंको सहभोज दियागया है । दरवाज़े पर नफ़ीरी बज रही है । रंडी का नाच भी होगा ही । कुछ ग़रीबों को ख़ैरात भी बाँटी है । लतीफ़हुसैन स्वयं मुट्ठी भर २ कर अन्न बांट रहा था । इतने में एक साधु गली से गुज़रा । साधु ने पूछा कैसा उत्सव है ? पता लगा कि पद-वृद्धि हुई है । बूढ़ा साधु रामानन्द मुसकराया । बोला— 'पाप देर में फलता है ! अच्छा बाबा तेरे कर्म' ! इतना कहके साधु

चल पड़ा। लतीफ़हुसैन ने कहा 'बाबा, ख़ैरात ले जा'। साधु ने डपट के कहा— 'म्लेच्छ'! हम ख़ैरात नहीं लेते, भिक्षा माँगनी हो तो हमारे यहाँ जमुना जी के किनारे आना'!

लतीफ़हुसैन ने साधु की बात को हँसकर उड़ा दिया। समझा पागल था। बिना ख़ैरात लिये पेट कैसे भरता होगा। साधु गया, उत्सव रातभर ख़ूब हुआ। नाँचते २ रंडी की आँख ने लतीफहुसैन को अपनी ओर खींच लिया। पाप वासना चरितार्थ करने में कुलीन लोग भले ही सोच विचार करें पर नीच लोग देर नहीं करते। दिल में आया और क्रिया में पूरा हो गया। लतीफ़ ने ऐसा ही किया। घर की बीबी का निरादर होकर वेश्या की ख़ूब पूजा होने लगी। पतिप्राणा बीबी को एक दिन रोता बिलखता घर से निकाल दिया गया। लतीफ़-हुसैन के घर पर रण्डी का राज्य हो गया।

(४)

क्रमशः रण्डी के ख़ून का बिगाड़ लतीफहुसैन के शरीर में घर कर गया। लतीफ़हुसैन का ख़ून बिगड़ गया, सारे शरीर पर लाल२ चकत्ते पड़ गये। मूत्र जलकर ख़ून पीप से मिल कर आने लगा। शरीर पर फोड़े होने शुरु हो गये। खाल झड़ने लगी। डाक्टर को बुलाया, हकीम साहब आये, सब ने ख़ून की ख़राबी और आतशक, सूज़ाक बताया। इलाज आरम्भ हुआ। दोनों ने दवा दी। ईश्वर का न्याय! कोई औषधि अनु-कूल न पड़ी! दफ्तर वाले घृणा करने लगे। नौकरों ने कपड़े छूने से परहेज़ किया। साहब ने छुट्टी दे दी। दिन २ रोगी छट-

पटाता गया । अन्त में नाक बैठ गया । तालू में छेद हो गया। सिर से बाल उड़ गये । इतनी शीघ्रता से खून में विष फैला कि हाथ पैरों की उंगलियाँ झड़ना शुरु हो गईं । अन्त में रण्डी ने घर का सब द्रव्य लूटकर लतीफ को घर से बाहिर कर दिया। उसकी दशा शोचनीय और करुणाजनक थी। मुहल्ले वाले उसपर तरस खाते थे पर उसके पास नहीं जाते थे । सब को भय था कि रोग हमें भी न हो जाये। पानी भी किसी ने उसे नहीं दिया, किसी प्रकार सरकते २ रोगी जमुना किनारे पहुंचा ! सोचा यमुना में डूब जाने से इस दुःख से छूट जाऊंगा । डूबना चाहा पर प्राणों के मोह को यवन कैसे छोड़ सकता; आर्य कृष्ण को गोदी में खिलानेवाली यमुनाजी म्लेच्छ मलिन रुधिर से कैसे अपवित्र हो सकती थी' । लतीफ़ बैठकर यमुना की ओर देखने लगा । देखा सामने से एक दीर्घाकृति साधु चला आता है । साधु यमुना में प्रवेश करके इस पार आया । लोग चारों ओर इकट्ठे होगये। उसके तेजसे प्रभावितहो सब ने उसके चरणों में नमस्कार किया । साधु ने कुछ पुड़ियाँ उनकोदीं और सेठों ने झुककर प्रणामकिया और फल मिठाईके थाल भेंट किये । साधु ने कुछ नहीं लिया । लतीफ़ ने देखा और स्वयं भिक्षा माँगने साधु की ओर चला। साधु हँस कर बोला—'म्लेच्छ ! देशद्रोही ! परे रह, तेरी छाया से मैं अपवित्र हो जाऊंगा। वहीं से माँग, क्या चाहता है' ? लतीफ ने देखा वही बाबा रामानन्द है । सचमुच लतीफ़ रामानन्द से भिक्षा माँगना चाहता है। बोला—'महाराज' मुझे भी कोई औषधि

हो ? मेरा शरीर फूट गया, अङ्ग गलकर गिरते आते हैं ! महा-राज ! साधु भी क्या परहेज़ करते हैं। मेरी रक्षा आप ही कर सकते हैं। मुझे बचाइये !"

साधु गंभीरता से उच्च स्वर से बोले "इस म्लेच्छ ने भोले मास्टर अमीरचन्द का बध झूंठे दोष लगाकर कराया है। इसने अपनी सती पत्नी को वेश्या के कारण घर से निकाला है, इस पापी की कोई औषधि नहीं ! जगदीश्वर की ऐसी ही इच्छा है कि यह गल २ कर मरे और घरसे निकला रहे ! देश-द्रोही और व्यभिचारी को यही दण्ड मिलता है। परन्तु इसने जो थोड़ा दान पुण्य किया है इस कारण इसकी वही निर्वा-सिता पत्नी इसकी इस समय सेवा करेगी। इस पश्चात्ताप के बाद अगले जन्म में इसकी शरीर शुद्धि होगी, इस बार नहीं" ।

ऐसा कह साधुने ताली बजाई। तुरन्त एक नारी भीड़ को चीर कर आगे आती दिखाई दी। साधु को प्रणाम कर उनकी आज्ञा ले लतीफ़ का हाथ पकड़ वह नारी उसे वहाँ से उठा ले गई। साधु चले गये। लोग इस घटना को देख कर चकित हो गये ।

(५)

कहते हैं पूरे १० वर्ष लतीफ़ उसी दशा में जीवित रहा। उसकी बीबी उसकी सेवा करती रही। समाचारपत्रों के लेखों और पीछे अनुसंधान से सरकार को भी पश्चात्ताप हुआ मास्टर अमीरचन्द निरपराध थे इसी अनुताप से लतीफ़

को भी पश्चात्ताप हुआ कि मास्टर अमीरचन्द निरपराध थे। इसी अनुताप से लतीफ़ को भी सरकार ने नौकरी से मौकूफ़ कर दिया। अब लतीफ़ को खाने पीने को भी रामानन्द से भिक्षा मिलती थी। पर रामानन्द ने उसे दया कभी न दी। लतीफ़ रोता था। और कहता था 'मैं अपराधी हूं! अमीरचंद अब मुझे क्षमा करदे! अपराधी क्षमा माँगता है''!

ज्योतिषी

(१)

"इस जीवन से तो मरजाना ही अच्छा है! जिस घर में उपवास करते तीन-२ दिन बीत जाँय तब भी आधा पेट खाने को मिले तो जीवन रखने से लाभ ही क्या है!!"

अविनाश दत्त की स्त्री ने रोते२ ऊपर लिखे वचन कहे तो अविनाश भी अपने को रोक न सके। फूट २ कर रोने लगे।

अविनाशी श्रौदीच्य ब्राह्मण थे। काशी उन की जन्म भूमि थी। बाल्यकाल में अविनाशी ने संस्कृत की उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। फिर तीन वर्ष में ज्योतिष के प्रसिद्ध २ ग्रन्थ सब पढ़ डाले थे। उन की प्रतिभा के विषय में उन के गुरु सदा औरों से कहते रहते थे कि अविनाशी सा प्रतिभाशाली कोई विरला ही ब्राह्मण उत्पन्न होता है। यह तो किसी दिन हम से भी अधिक यशस्वी होगा।

अविनाश का पन्द्रह वर्षकी अवस्थामें ही एक कुलीन ब्राह्मण कन्या से विवाह हो गया था । उमादेवी परमसुन्दरी और शिक्षिता थी । उन का जन्म भी समृद्ध घराने में हुआ था । उमा में पतिव्रताओं के सारे ही गुण विद्यमान थे । केवल ग़रीबी में वह न पली थी । इधर अविनाश का घर अत्यन्त दरिद्र था । माता पिता का बचपन में ही देहावसान हो चुका था । अविनाश के लिये वे एक कच्चा मकान छोड़ गये थे । विवाह भी उस के एक दूर के चचा ने रुपये मिलने के लालच से करा दिया था । जब विवाह करके लौटे थे तब ही धीरे २ उन के चचा ने उमादेवी का सारा आभूषण उड़ा लिया था । पर यह भेद किसी को पता नहीं लगा था । उमादेवी सब समझती थी पर पतिदेव से कुछ भी नहीं कहती थी । उसे डर था, अविनाश समाचार को सुन विश्वास ही न करेंगे । अविनाश को विवाह के बाद उमादेवी ही थोड़े से बचे हुये धन से ज्योतिष पढ़वाती रही । तब तक उमादेवी को अपने माता पिता की ओर से कुछ द्रव्य मिलता रहता था । अकस्मात् उस के पिता का प्लेग से देहान्त हो गया । कुछ दिनों के बाद इसी दुःख से उस की माता का भी देहान्त हो गया । बस घर का घर लोगों ने लूट खाया । जो थोड़ा बहुत द्रव्य उमा को मिला भी उससे अब तक दोनों जीवन निर्वाह करते रहे थे ।

आज दो मास होनेको आये कि घरमें द्रव्य सर्वथा न होने से उमादेवी को आधा पेट खाकर रहना पड़ताहै । तीन दिनसे उस ने कुछ भी मुंह में नहीं डाला है । अविनाश के लिये बच-

बार एक समय का भोजन मिल रहा था। भूख से अधमरी हो कर और इस दरिद्रता का अन्त न देख कर आज उमादेवी ने रोकर ऊपर लिखे शब्द कहे थे।

अविनाश भी अपनी दरिद्र दशा को समझते थे। वे करते क्या? उनकी प्रतिष्ठा बड़ी थी परन्तु उन्हें पैसे का भी रोज़गार अभी नहीं मिला था। किसी ने भी अभी तक उन का शिष्य बनना स्वीकार न किया था। पाठशालाओं में कोई जगह नहीं थी। अपने मुंह से द्रव्य याचना करनी उन्होंने सीखा नहीं था। इसी दुःखित दशा में पत्नी की यह बातें अकस्मात् सुन के वे फूट २ कर रोये।

पति पत्नी कुछ देर तक रोते रहे। अन्तमें धैर्य्य धारण कर अविनाश बोले-

" उमा ! यदि ब्राह्मण का पुत्र हूं तो आगे से कभी तुझे ऐसा वचन न कहना पड़ेगा और न भूखे पेट सोना होगा। अब हद हो चुकी है और नहीं सहा जाता।"

ऐसा कहतेर पगड़ी संभाल खड़ाऊं पहिरे ही घर से बाहिर निकल गये।

(२)

अविनाश दत्त के घर से दो मिनट की दूरी पर एक सुप्रसिद्ध हलवाई की दूकान थी। पण्डित जी को उधर ही आता देख कर हलवाई ने खड़े हो कर उन्हें प्रणाम किया। पंडित जी ने कहा " आनन्दित रहो "।

पहिले भी पंडितजी को उधर से जाते देख हलवाई प्रणाम करता था परन्तु पण्डित जी मुंह में ही "आनन्दित रहो" का पाठ करके बिना उधर ध्यान दिये चले जाते थे। परन्तु आज पंडित जी ने बड़े उच्च शब्दों से "आनन्दित रहो" कहा था।

पण्डित जी वहीं खड़े हो कर हरफूल हलवाई से कुशल क्षेम पूछने लगे। हरफूल ने बैठने को आसन दिया तो पंडित जी बैठ गये।

पंडित जी—"भाई व्यर्थ बैठे तो अच्छा नहीं लगता। तुम्हारी जन्म पत्री हो तो लाओ देख दूं।

हलवाई के भाग्य खुल गये। बड़ी प्रसन्नता से घर में से जन्मपत्री का बंडल निकाल लाया। पण्डित जी ने विचार-पूर्वक देख कर उस का सारा पिछला हाल बता दिया और आगे को भी एक अनिष्ट से बचने का उपाय बता दिया।

हलवाई ऐसा सच्चा २ हाल पण्डित जी से सुन कर अवाक् रह गया। जो २ घटनायें बीत चुकी थीं, पण्डित जी ने सब ठीक २ बताईं। आगे के अनिष्ट का समाचार और उपाय भी उस ने सच समझा, वह उनके पैरों में पड़ गया और कहने लगा कि पंडित जी अगले अनिष्ट का उपाय भी आप ही करें। गायत्री का पाँच सौ जप आप ही मेरे लिये कर दिया करें। मैं जो श्रद्धाभक्ति से तुच्छ भेट करूं उसे भी आप कृपया स्वीकार कीजिये।

यह कह कर हलवाई ने एक थाल में उत्तम २ मिठाइयाँ सजा कर और बीच में बीस रुपये नकद रख कर पंडित जी

के सामने भेट रक्खी। पंडित जी ने देखा! देख कर कहा—
" नहीं नहीं, मैं नहीं लेता "।

पण्डित जी पुराने स्वभाव के अनुसार कह बैठे। फिर पछताये, उधर हलवाई ने जो दो तीन बार लेनेका आग्रह किया तो झट से पंडित जी ने कहा-

" हाँ हाँ, कह तो दिया, अपने नौकर के हाथ हमारे घर भिजवा दो, हम अपने हाथ से नहीं ले सकते।"

हलवाई ने प्रसन्नता से नौकर के हाथ थाल को घर भिजवा दिया।

अविनाश घर पर लौटे। उमा ने हंसते २ आगे बढ़ कर स्वागत किया। अविनाश ने कहा अभी से क्या खुश हो गईं अभी आगे २ देखना। आज तो श्री गणेश ही हुआ है। उमा ने मिठाई पति देव के सामने धरी; तो कहने लगे कि, "तुम्हें अब तीन दिन तक यही मिठाई खिलाऊंगा और मैं तुम्हारे हाथ की बनी दाल (रोटी खाऊंगा)।"

उमादेवी हंस कर पीछे हट गई।

(३)

अहमदाबाद के सबसे बड़े सेठ लालूभाई के एकमात्र पुत्र ज्वर से बीमार पड़े हुए हैं। आज सत्रह दिन से ज्वर सर्वथा नहीं उतरा, बम्बई से बड़े२ सिविलसर्जन बुलाये गये हैं। सबने एक मत होकर सम्मति दी है कि रोगी का बचना असंभव

है। सेठ करोड़पति हैं। गुजरात की सबसे बड़ी कपड़े की मील उन्हीं की चल रही है। उनका एकमात्र पाँच वर्ष का पुत्र ज्वर-ग्रस्त सत्रह दिन से पड़ा है, डाक्टरों को दो २ हजार रोज़ की फ़ीस मिल रही है पर सबने बच्चे का बचना असम्भव बताया हैं। सेठ डाक्टरों के आगे हाथ जोड़ते पैरों पड़ते हैं परन्तु डाक्टर क्या करें। उनकी दृष्टि में रोगी आसन्न मृत्यु था! डाक्टर जाने वाले ही थे कि सेठ साहब के घरके पुजारी एक ज्योतिषी जी को अपने साथ वहीं ले आये।

इधर अविनाशदत्त हरफूलके लिये जप करके अच्छा कमाने लगे थे। कुछ ही दिनों में काशी में उनकी धूम मच गई। जिस को अविनाश ने जो कुछ बता दिया सब सत्य ही निकलता था। इसी प्रसिद्धि को सुनकर सेठ लालूभाई ने भी रोगी की भयंकर अवस्था देख कर अविनाशदत्त को काशी से तार द्वारा बुला भेजा था। अभी पुजारी जी अविनाश को स्टेशन से लाये हैं।

अविनाशदत्त ने आते ही सेठ को डाक्टरों के आगे हाथ जोड़ते और कातर होते देखा। अविनाश एक दम क्रुद्ध से होकर बोलेः-

"सेठ साहब! इतना कातर क्यों होते हो, लड़के की जन्मकुण्डली तो हमें दिखाओ?"

सेठ-(अनमनाहोके) "महाराज अभी तो आप आही रहे हैं। कुछ देर आराम करें पीछे जन्मकुण्डली भी देख छोड़ना।"

अविनाश सेठ की परवशता, कातरता और डाक्टरों के वचनों पर दृढ़ विश्वास को देख कर कुछ खिन्न हुए। उन्होंने

आग्रहपूर्वक पुजारी से कहा—"पुजारी जी ! ज़रा तुमही जाकर जन्मपत्री लाओ।"

पुजारी जी ने जन्मपत्री अन्दर से लाकर अविनाशदत्त के हाथ में दी। अविनाश ने दो मिनिट देख कर ही जन्मपत्री को रख दिया। पुजारी और सेठ उत्सुक नयनों से देख रहे थे। अविनाश को जन्मपत्री को धरती पर रखते देख निराश हो—

" बस महाराज ! क्या अब आशा नहीं"?

अवि०—"आशा कैसी ? मैं समझा नहीं'?

सेठ—"अब पुत्र बचने की क्या कोई भी आशा नहीं ?"

अवि०—अरे ! किसने कहा है। तुम्हारा पुत्र तो अच्छा हो जायेगा।

सेठ—हैं, हैं !! क्या कहा महाराज ! अच्छा हो जायेगा ? क्या यह बच सकता है ! डाक्टर तो कहते हैं कल तक बचना भी असम्भव है।

अवि०—"डाक्टर कहते होंगे। तुम्हारा पुत्र निश्चय से अच्छा हो जायेगा।"

सेठ—सच मुच ! महाराज ! यह तो असंभव सा है। अब क्या अच्छा होगा। सत्रह दिन से यह निराहार ज्वर से पीड़ित है। उसने तो आँखें सत्रह दिन से मूंद रक्खी हैं। ज्ञान शक्ति इसकी नष्ट हो चुकी है। महाराज ! मुझे क्यों लुभाते हो। अपने रुपये के लिये ब्राह्मण भी झूठ बोलने लगे !

अवि०—सेठ ! होश करो, क्या बोल रहे हो। अविनाश का वचन अन्यथा नहीं होता, तुम्हारा पुत्र दो दिन तक इसी

अवस्था में रह कर परसों बारह बजे दिन के पीछे से अच्छा होना शुरू होगा। पाँच दिन में सर्वथा रोग मुक्त होगा। यह सब अच्छे हैं। मैं भी ब्राह्मण हूँ, तुम्हारे घर निरन्न पानी यूंही चौबीस घन्टे बैठूंगा देखूं लड़का कैसे मरता है। लड़का मर गया तो आज के पीछे ज्योतिष छोड़ दूंगा। डाक्टर भी ब्राह्मण की प्रतिज्ञा सुनते हैं। वे भी देखें कि, डाक्टर और ज्योतिषी में से कौन सच्चा है।"

अविनाश वहीं कुशाके आसन पर हाथ पैर धोकर बैठगये दिनभर और रातभर कुछ नहीं खाया। दूसरा दिन और बीत गया। सेठ ने बहुत आदर सत्कार से स्नान पान के लिये आग्रह किया ब्राह्मण ने कुछ नहीं लिया। तीसरे दिन के बारह बजे से पूर्व ही डाक्टर आ पहुंचे। देखा रोगी अभी मरा नहीं।

देखते २ बारह बजे। रोगी की माता और सम्बन्धी अन्तः-पुर से बाहर निकल ज्योतिषी की परीक्षा को और रोगी के मुंह को देख रहे थे। इसी समय ब्राह्मण ने उठकर हाथ में जल लेकर रोगी के छींटा दिया, साथ ही मुंह से मन्त्र भी उच्चारण किया।

आश्चर्य्य!! रोगी ने झट आखें खोलदीं। करवट बदली और धीरेसे कहा-"माँ, माँ पानी दो, गला सूख रहा है।"

माता लज्जा छोड़ कर प्रसन्नता से बच्चे की ओर पानी लेकर दौड़ी। बच्चे के सिर को सूंघा। बढ़कर पुत्र के मुखका चूमा लिया डाक्टर चकित होकर बीमार का मुंह देखने लगे। सेठ ने पंडित

जी के पैरों पर पगड़ी रखकर पैर चूम लिये। पंडित जी कुछ गर्व से सेठ को अपने पैरों पर से हटाते हुये बोले।--

" सेठ जी ! फिर ब्राह्मण पर अविश्वास न करना। "

सेठ ने सिर नीचा कर लिया।

सेठ का पुत्र पाँच दिन में सर्वथा अच्छा हो गया। सेठ ने पुत्र के अच्छा होने पर अपने संकल्प के अनुसार ज्योतिषी अविनाशदत्त के लिये सारी आयु पर्यन्त ५००) रुपये मासिक देने निश्चित कर दिये थे। परन्तु ज्योतिषी जीने इसकी अपेक्षा एक छोटी सी मिल अपने नाम की खोलने को सेठ से आग्रह किया। सेठ ने दो लाख रुपया लगाकर ज्योतिषी के लिये कपड़े की छोटी सी मिल खोल दी है।

उमा से एक दिन अविनाश कहने लगे ' उमा ! अब तो पेट भर रोटी मिल जाती है न ! मैं वही गरीब ब्राह्मण हूँ जिस की ब्राह्मणी को तीन २ दिन भूखे पेट रहना पड़ता था।

उमा संकोच से मुस्कराती हुई बोली--"मैं तो आप को केवल ब्राह्मण ही समझती थी। मुझे विदित न था कि आप इतनी सामर्थ्य रखते हैं।"

अविनाश--"सचमुच यह ब्राह्मण की सामर्थ्य न थी यह जन्म पत्री की कृपा है।" नमो जन्म पत्र्यै।

"सैनिटोरियम"

(१)

"डाक्टर निकाला गया, चौबीस घन्टों का नोटिस मिला है; अन्त में पाप फल लाया" इस प्रकार चिल्लाते २ तेज़ क़दम बढ़ाये हुए बूढ़ा रामप्रताप सैनिटोरियम के सब कमरों के आगे से घूम गया।

इस अनोखे समाचार को सुन कर रोगी; अपने २ कमरों से बाहिर निकल पड़े, जो अधिक रोगी थे वे अपने नौकरों को बाहर भेजकर इस समाचार के सत्यासत्य का निर्णय कराने को उत्सुक होगये। क्षणभर में सैनिटोरियम में शोर मच गया लोग आ आकर बूढ़े चपरासी रामप्रताप के चारों ओर इकट्ठे हो गये। रामप्रताप पर एकदम सब ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी—"क्या हुआ जी रामप्रताप ?" क्या माजरा है ?" "कौन डाक्टर निकाला गया" किसने निकाला "ऐसे ही बात उड़ादी है डाक्टर बाबू को कौन निकाल सकता है ?" आदि २ प्रश्न रामप्रताप पर चारों ओर से होने लगे। रामप्रताप को बड़ी कठिनता हुई, किस२ का उत्तर दे। परन्तु उसने निश्चय-पूर्वक गरज कर कहा, "हाँ बाबू ! रामप्रताप झूठ नहीं बोलता है। महाराज ! मैं बूढ़ा होने को आया मैंने आज तक कभी भी झूठ नहीं बोला। आज ही कल में सारा भेद पता लग जायेगा कि डाक्टर बाबू को निकाला गया है या नहीं।"

वास्तव में रामप्रताप को बात का कुछ भी पता नहीं था। वह केवल डाक्टर की अभूत पूर्व शोकाकुल मूर्ति देख कर ही भाँप गया था। कि दाल में कुछ काला है। धर्मात्मा और अनुभवी रामप्रताप यद्यपि इस समाचार को कहीं से भी सुन नहीं सका था तो भी वह इसको ध्रुव, सत्य, निश्चित समाचार समझ कर सर्वत्र निर्भय हो कर फैला रहा था। उसकी बात पर किसी ने उतना विश्वास नहीं किया जितना कि मिस डावर नर्स ने।

(२)

अगले दिन सैनिटोरियम में उस दिन की नई घटनाओं के विषय में दैनिक समाचार पत्र में यह छपा हुआ पहुंचा:—

"भारत के दक्षिण प्रान्त में मलयाचल के पास की पहाड़ी जगह पर राजयक्ष्मा के रोगियों के लिए एक सैनिटोरियम (स्वास्थ्यालय) बना हुआ है। यहाँ की चिकित्सा की प्रख्यति सुनकर दूर २ के प्रान्तों से भी रोगी आते हैं। यहाँ पर लब्धप्रतिष्ठ डाक्टर रेवाधर बड़ी कुशलता से राजयक्ष्मा की चिकित्सा करते हैं। परन्तु कुछ दिनों से डाक्टर साहब से रोगी असन्तुष्ट रहने लगे थे। रोगी समझते थे कि उनका इलाज भी पहले की तरह ध्यान से नहीं होता और डाक्टर साहब रुपया भी अधिक ले रहे हैं। परन्तु यह साधारण सी बात थी। सब से बड़ा कारण डाक्टर के ध्यान न देने का यह था कि वे किसी रमणी के प्रेमपाश में फँस गये थे।

"अनुसंधान से पता लगा है कि एक सोलह वर्षकी सुन्दरी रोगिणी स्त्री अपना इलाज कराने सैनिटोरियम में उत्तरीय भारत से आई थी। डाक्टर रेवाधर ने उसका इलाज बड़ी सावधानी और सहानुभूति से किया। दो महीने बाद रमणी अच्छी हो गई। और शरीर पर भी पूर्व की सी कान्ति छा गई। सोलह वर्ष की आयु, रूप, लावण्य और प्रत्युत्तर में प्राप्ति की पूर्ण आशा समझ कर डाक्टर साहब उस पर मोहित हो गये। रमणी भी डाक्टर साहब पर अनुरक्त थी ही, बस फिर क्या था? धीरे २ अनुराग ने पग बढ़ाये। डाक्टर साहब रोगियों को देखना छोड़ जब तब उसी ललना के कमरे में जा घुसते थे। नारी भी दबे पाँव रात को डाक्टर के कमरे में आ सोती थी और दिन निकलने से पूर्व अपने कमरे में जा पहुंचती थी। इसी प्रकार कुछ दिन गुप्त व्यापार होता रहा। परन्तु अन्त में इस भेद को एक रमणी ने ही पा लिया। पुरुष इस भेद को उतना शीघ्र नहीं जान सकता जितना शीघ्र स्त्रियाँ जान लेती हैं। नर्स डाक्टर ने इस भेद को जान ही लिया। वह रात दिन छिप २ कर भेद लेती रही। जब उसे निश्चय हो गया तब उस ने बिना किसी को बताये एक लंबा पत्र सीधा मालिकों को ही लिख भेजा। वह नर्स युरोपियन थी। उसने इस प्रकार से सैनिटोरियम का नाम कलंकित होने की आशंका से ही यह सूचना भेजनी आवश्यक समझी। सैनिटोरियम के मालिक मद्रास रहते थे। वहाँ पर पत्र को पढ़कर सेक्रेटरी को सारी

बातें जानने के लिये भेजा गया। सेक्रेटरी साधारण वेश में चुपचाप अगले दिन सैनिटोरियम पहुंचा। नर्स को एकान्त में बुला कर सारी शिकायतें सुनीं। कुछ रोगियों से भी मिला। जब रात के साढ़े दस बजे तो चुपचाप डाक्टर रेवाधर के कमरे में चला गया। अन्दर विचित्र दृश्य था। वही रमणी जिसके विषयमें शिकायत थी डाक्टर की चारपाई पर डाक्टर के साथ बैठी हुई थी। बस अधिक प्रमाण की कुछ आवश्यकता न थी। तुरन्त डाक्टर को २४ घण्टों में सैनिटोरियम से निकल जाने का हुक्म दिया गया। डाक्टर बहुत चकित हो गया। उसने हाथ पाँव बहुत जोड़े परन्तु लाभ इतना ही हुआ कि निकल जाने का समय २४ घण्टे के स्थान पर ७ दिन तक बढ़ा दिया गया। शोक! डाक्टर रेवाधर ने ऐसे पवित्र व्यवसाय को भी इस अनुचित कार्य से कलंकित किया है। हमें यह भी पता लगा है कि उक्त रमणी का पहिले का भी एक विवाहित पति है जो लाखों रुपये का मालिक है। परन्तु रमणी उसकी कुछ परवाह नहीं करती है। यद्यपि डाक्टर को कठोर दण्ड नहीं मिला तथापि हम सैनिटोरियम के संचालकों को उनके सुप्रबन्ध पर बधाई देते हैं"।

(३)

डाक्टर रेवाधर सैनिटोरियम से पृथक हो कर चुप बैठने वाले आदमी न थे। उनकी इतने दिनों की चिकित्सा-कुशलता का अन्तिम कुफल नौकरी से हाथ धो बैठना हुआ। इस

कारण उन्हों ने कुछ ही महीनों में एक मील दूरी पर अपना नया सैनिटोरियम खोल दिया। डाक्टर के यश को सुन के आने वाले रोगी उसके नये सैनिटोरियम में जाने लगे। कितने ही रोगी डाक्टर साहब ने अच्छे भी किये। एक बम्बई के सेठ रोगी होकर आये। अच्छे होने की आशा दिलाकर डाक्टर ने उनसे साठ हज़ार रुपया लेकर उनके नाम से कुछ कमरे,पानी का बड़ा भारी हौज़ आदि बनवाये। इसी प्रकार सैनिटोरियम कुछ दिनों में प्रसिद्ध हो गया। एक दिन बम्बई से एक और सेठ रोगी होकर डाक्टर रेवाधर के सैनिटोरियम में प्रविष्ट-हुए। सेठ बड़े कंजूस थे। डाक्टर ने भी जान लिया कि सेठ मुन्नाभाई कम से कम दस लाख की आसामी है। डाक्टर ने खूब ध्यान से इलाज करना आरम्भ किया सेठ साहब अच्छे हो गये। परन्तु सेठ साहब ने आवश्यक रुपये के सिवाय डाक्टर को कुछभी अधिक रुपया नहीं दिया। वह तो सैनिटो-रियम के दैनिक ख़र्च से भी घबरा रहे थे। डाक्टर से कहने लगे कि अब हम १ सप्ताह तक बम्बई जाने का विचार रखते हैं। डाक्टर ने अपना काम बिगड़ते देख उनको अधिक दूर ठहरने का बहुत आग्रह किया परन्तु सेठ साहब को रुपया प्यारा था, सेठ के निश्चय में कब परिवर्त्तन हो सकता था। अन्त में डाक्टर निराश होकर अपने कमरे में आ गये। उनकी वही प्रियतमा रमणी जो यहाँ उनके साथ रहती थी डाक्टर साहब से शोक का कारण जानने को उत्सुक थी। डाक्टर

साहब से कारण जान चुकने पर रमणी हँस पड़ी। डाक्टर ने पूछा 'तुम हँसी क्यों ? हंसने की इस में क्या बात है ?'

रमणी सेठ साहब को जब तक कहो मैं ठहरा देती हूं। इतनी साधारण सी बात पर आप चिन्तित हो रहे हैं यही सोच कर मैं हँसी थी।

(४)

आज अदालत में एक विचित्र अभियोग पेश है। लोग इस विचित्र अभियोग को सुनने के लिये दूर २ से एकत्रित हुए हैं। अभियोग इस बात पर है कि एक रमणी अपने पति के घर से भाग आई है।

अदालत आरम्भ हुई। पहिले वादी को अपना वक्तव्य सुनाने को कहा गया। वादी ने यों कहना आरम्भ किया:-

"मेरा नाम मुन्नाभाई है, मैं बम्बई का रहने वाला हूं, पिता का नाम राजाभाई था। मैं रोगी होकर गत सितम्बर मास में डाक्टर रेवाधर के सैनिटोरियम में पहुंचा। वहां पर तीन ही महीने में डाक्टर ने मुझे अच्छा कर दिया मेरे आने से पाँच दिन पूर्व तारावती नाम की स्त्री मेरे पास आने लगी। वह युवती थी और सुन्दरी भी थी। मेरे से धीरे २ उसने मेरा हाल पूछना और स्नेह भरे वचन बोलकर मेरे दिलको धैर्य देना आरम्भ किया। चार दिन में ही तारावती ने मुझसे गहरा प्रेम डाल लिया। दिन में बीस २ चक्कर वह मेरे कमरे में लगाती थी। पहिले तो मैं डाक्टर रेवाधर की पत्नी समझ

कर उससे बात करने में भी झिझकता था परंतु जब तारावती ने कहा कि डाक्टर रेवाधर तो मेरे पिता समान हैं मैं उन्हें "पिता" कहकर सम्बोधित करती हूं तब मैंने भी दिल खोलकर बात चीत आरम्भ कर दी। डाक्टर ने कुछ भी बुरा न मनाया।

तारावती के कहने मात्र से मैं वहाँ और ठहर गया। जिस प्रकार से मैं तारावती पर मोहित था उसी प्रकार से वह भी मुझ पर मोहित हो चुकी थी। मैं अविवाहित था ही, विवाह के प्रस्ताव पर हम दोनों सहमत हो गये। डाक्टर साहब को किसी ढंग से सूचना मिली तो डाक्टर साहब एकदम असन्तुष्ट हो गये। मैं घबराया। पर तारावती तनिक भी न घबराई प्रत्युत दृढ़ता के साथ उस ने विवाह करने का निश्चय कर लिया। और डाक्टर साहब को मनवा लेने का भी अपने पर भार लिया। कुछ दिनों के बाद डाक्टर भी सन्तुष्ट हो गया। परन्तु एक शर्त डाक्टर ने लगा दी कि मुझा भाई आधी जायदाद तारावती के नाम लिख दे। मैं इस का अभिप्राय तब कुछ भी नहीं समझा। मैंने डाक्टर से कहा भी कि जब मेरे माता पिता भाई आदि कोई भी जीवित नहीं तो मेरी धर्म पत्नी बनने पर तो स्वयं यह सारी ही जायदाद की स्वामिनी बन जायगी। डाक्टर ने नहीं माना। मैं भी अनुराग में मस्त था। डाक्टर ने मुझ से आधी जायदाद के अधिकार लेने के काग़ज़ तारावती के नाम लिखा कर तब मुझ से तारावती की शादी की। हमारी शादी केवल एक पुरोहित के सामने मन्दिर में

हुई। मैं बम्बई में तारावती को लेकर चला आया। बस दो मास भी पूरे न बीते थे कि तारावती घर से डाक्टर के पास भाग आई है।

जिस समय तारावती घर से भाग गई। मुझे कुछ पता न लगा, अन्त को मैंने यह निश्चय करके कि तारावती डाक्टर के पास चली गई होगी, डाक्टर को पत्र भेजा डाक्टर ने कोई उत्तर न दिया। लाचार मैं बिना सूचना दिये फिर सैनिटोरियम में पहुंचा। देखा तो तारावती वहाँ थी।

सैनिटोरियम में तारावती और डाक्टर का व्यवहार मेरे से एकदम उलटा हुआ। दोनों ने स्पष्ट कह दिया कि तारावती से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं हुआ।

विवाह सम्बन्ध की तो बात ही क्या है? तारावती पहले से विवाहिता है। अब तारावती भी हाथ से गई और डाक्टर ने मेरे से तारावती के नाम पाँच लाख रुपये पर हस्ताक्षर भी करा कागज़ दबा लिये हैं।

मुझे सब के बीच जो कलङ्कित होना पड़ा सो पृथक रहा। यदि तारावती मुझे न भी मिले तब भी मेरा धन तो मुझे मिल जावे।

(५)

अदालत ने तारावती और डाक्टर का बयान सुनकर एक सप्ताह के बाद निर्णय सुना दिया। निर्णय का यह आशय था:—

“वादी प्रतिवादी दोनों का बयान सुनकर हमें इस अभियोग पर तनिक सा भी विचार करने से प्रतीत होता है कि

वास्तव में सेठ मुन्नाभाई के साथ अन्याय हुआ है। ?सिव दी ने यह स्वीकार किया है कि पाँच लाख रुपया तारावती के नाम मुन्नाभाई ने लिख रक्खा है और व कागज़ात भी तारावती के पास हैं। यह बात निर्भ्रान्त सिद्ध हो सकती है कि ऐसा कोई भी मूर्ख पुरुष नहीं हो सकता जो बिना ही किसी महती आशा के इतनी बड़ी धन राशी एक स्त्री के नाम लिखदे जिस से उस का तनिक सा भी सम्बन्ध न हो। प्रतिवादी ने यह भी चालाकी की है कि कागज़ में यह शर्त नहीं लिखी कि यह रुपया इस लिये लिया जावेगा कि तारावती से मुन्नाभाई का विवाह होगा। मुन्नाभाई ने कामान्ध होकर साधारण विवेक से भी काम नहीं लिया जो विवाह की बात भी कागज़ में लिख देता। इस कारण यह तो निर्विवाद सिद्ध है कि मुन्ना-भाई ने विवाह के लिये ५ लाख की जायदाद तारावती के नाम लिख दी है।

अब यह दूसरा प्रश्न रह जाता है कि तारावती का विवाह क्या मुन्नाभाई से हुआ ?

पुरोहित की गवाही से स्पष्ट मालूम पड़ता है कि मुन्नाभाई का विवाह मन्दिर में उसने स्वयं तारावती के साथ कराया था। यह भी मिजडावर ने स्पष्ट कहा है कि तारावती मुन्ना भाई के साथ यहाँ से चली गई और दो महीने के बाद अकेली वापिस आई। एकदम मुन्नाभाई के साथ दो महीने तारावती बम्बई रही यह सिद्ध हो चुका है।

कोई कारण नहीं कि डाक्टर ने दो महीने तक मुन्नाभाई के तारावती को भगा ले जाने पर (यदि वह भगा ले जाता हो) क्यों शान्ति की, और पुलिस में रिपोर्ट न की । इससे यही परिणाम निकलता है कि तारावती से मुन्नाभाई का विवाह हुआ था ।

अब प्रतिवादी की ओर से हिंदू धर्मशास्त्र के अनुसार जो यह प्रश्न अपने पक्ष पोषण के लिये उठाया गया है कि क्या पहिले से ही विवाहिता तारावती मुन्नाभाई से विवाह कभी कर सकती है। यह बात हिन्दू धर्म के अनुसार ठीक भी है। परन्तु यह सिद्ध होने पर भी कि तारावती विवाहिता है साथ ही हम इस निश्चय तक पहुंच जाते हैं कि वह एक स्वतन्त्र स्त्री है। मिसडावर की साक्षी और सैनिटोरियम के संचालक की गवाही से यह सिद्ध हो चुका है तारावती का सम्बन्ध डाक्टर रेवाधर से भी वैसा ही रहा है जैसा पति पत्नी का। जब ऐसा है तो मुन्नाभाई से तारावती ने दूसरा विवाह कर डाला हो तो इसमें आश्चर्य क्या ?

इस कारण हिन्दू धर्मशास्त्र और हिन्दू ला का ध्यान रखते हुए हम यह निर्णय करते हैं:—

१. तारावती मुन्नाभाई से विवाहित पति के समान रहना पसन्द करे तो ५ लाख रुपये तारावती को मिलें।

२ यदि तारावती मुन्नाभाई से पत्नीवत रहना नहीं चाहती तो पाँच लाख रुपया मुन्नालाल को ही मिले ।

अन्त में हमें इस निर्णय को लिखते हुए दुःख से कहना पड़ता है कि इस में एक उत्तम पेशे वाले डाक्टर रेवाधर का बड़ा हाथ है जिसने रुपये के लोभ में यह सब कार्य तारावती से कराया है।

(६)

तारावतीने डाक्टर की ही इच्छा से दूसरा फैसला पसन्द किया। मुन्नाभाई को ५ लाख वापिस मिल गये।

उधर सैनिटोरियम के रोगियों में भी अपनी अप्रतिष्ठा का कारण तारावती को समझ डाक्टर रेवाधर ने तारावती को सैनिटोरियम से विदा कर दिया।

तिरस्कृता तारावती बिना किसी शर्त के ही मुन्नाभाई के घर क्षमा माँगने स्वयं गई। मुन्नाभाई ने भी रुपया अपने हाथ में आजाने पर तारावती को पूर्वावत् ग्रहण करलेना स्वीकार किया।
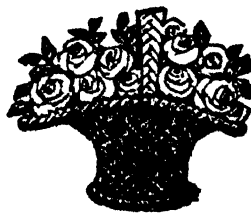
'मैं हिन्दू हूं'

आगरा हिन्दू मुसलमानों के दंगे देखकर प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। सुनते थे सरकार ने इस बार अच्छी प्रकार गुन्डों को दमन करने का निश्चय कर लिया था। गामू कसाई पर मुसलमानों को भड़का कर लड़वाने का दांव सर्वत्र लगाया जा रहा था। इस दंगे में तीन हिंदू शहीद हुये बतलाये जाते थे सरकार ने डिप्टी मैजिस्ट्रेट शेख अकबरअली की कचहरी में मुकद्दमा चलाया है। कुछ हिन्दू भी अपराधी समझकर पकड़े गये थे कचहरी में सरकारी वकील सरदार लाभसिंह ने अच्छी प्रकार सिद्ध कर दिया कि गामू जामामस्जिद पर खड़ा हो कर चिल्ला रहा था कि, "मारो काफिरों को, कोई काफ़िर भागने न पाये। आज मुहर्रम का दिन है। आज काफ़िरों को दोज़ख तक पहुंचा के ही तुम्हें जन्नत नसीब होगी, अल्लाह का हुक्म है, कुरानशरीफ़ का हुक्म है, रसूल का हुक्म है। जो हुक्म-उदूली करेगा वह भी काफ़िर कहायेगा।" इस प्रकार वकील ने अनेक प्रमाणों और गवाहों से सिद्ध कर दिया कि गामू ही सारी हत्याओं का करवाने वाला है।

गामू की ओर से अनेक मुसलमान वकील बेरिस्टर यह सिद्ध कर चुके थे कि गामू उस दिन आगरा में उपस्थित ही न था। उस दिन वह दिल्ली में रामलाल सर्राफ़ के यहाँ अपना हिसाब

किताब करने गया था। दिल्ली के रामलाल सर्राफकी गवाही भी गामू के पक्ष में हुई। उसने अपनी बही में उस तारीख़ को गामू के रुपये दिये लिख रक्खे थे। आगरे में झगड़ा सायंकाल के चार बजे हुआ था। बही में उसी तारीख़ को ठीक चार बजे शाम को गामू ने रूपये लिये, ऐसा लिखा हुआ था।

अन्त में डिप्टी मजिस्ट्रेट साहब ने सरकारी राय, हिन्दु-जनता, लोकमत इन सब की कुछ भी परवाह न कर के राम-लाल की बही के प्रमाण से गामू को अपराध से मुक्त कर दिया। गामू को छोड़ दिया गया। लोगों ने समझा न्याय का खून हुआ है। सारी चाल स्वयं डिप्टी साहब की चली हुई है। दो दिन पहले ही मुसलमानी मज़हब के नाम पर गामू के वकील डिप्टी के पास जाकर गिडगिडाये थे। मुसलमान डिप्टी साहब ने उन को यही चाल तब बता दी थी। लोगों को इस निर्णय का पहली रात ही निश्चय हो गया था, क्यों कि उन्हें डिप्टी साहब का हिन्दू मेहतर झाडू लगाते हुए सब बातें सुनकर यह भेद बता गया था।

उस दिन आगरे में हिन्दुओं को पता लग गया कि मुसल-मान कितना ही नीच क्यों न हो पर मुसलमान की हैसियत में वह सब हिन्दुओं से अच्छा है। हिन्दू सभी दण्डित हुए और गामू छोड़ दिया गया।

गामू को रामलाल से कुछ स्नेह हो गया। राम लाल हिन्दू होकर उस के पक्ष में गवाही न देता तो गामू को कई वर्ष की

कड़ी जेल भोगनी ही पड़ती। कालेपानी जाने की भी संभावना थी। गामू और रामलाल पहिले लेन देन अवश्य करते थे, पर दंगेके दिन गामू ने रामलाल से कुछ न लिया था। रामलाल दिल्ली था। यह सब रामलाल को सिखा पढ़ाकर मुसलमानों ने चाल चली थी।

रामलाल का एक मात्र पुत्र हीरालाल बहुत सीधा लड़का था। वह अभी दश वर्ष का ही था कि उस की माता का देहान्त हो गया। पिताने बड़े लाड़ चाव से उस को पाला था। उसकी आयु अब १४ वर्ष की थी, उसकी सुन्दरता किसी से छिपी न थी। गामू की कलुषित आँख उस पर भी पड़ गई पिता का मित्र जान कर हीरालाल भी गामू को चाचा कहने लगा। गामू ने धीरे धीरे उस के साथ सैर करना शुरु कर दिया। सिनिमा और थियेटर में ले जाना शुरु कर दिया। एक रात दो बजे जब थियेटर समाप्त हुआ तो बाहर खड़ी हुई मोटर में हीरालालको बैठा कर गामू रात ही रात गाज़ियाबाद ले गया। लड़का उसे विश्वासपात्र समझकर कुछ न बोला। अगले दिन आगरे में उन्हीं डिप्टी साहिब के घर उसकी चोटी काट दी गई। और जामा मसजिद में लेजा कर उसे जबरन मुसलमान बनाया गया। डिप्टी साहब गामू से बड़े प्रसन्न हुए। बोले: "तुम दीन की इसी तरह खिदमत करते रहे तो खुदा तुम्हें जन्नत बख़शेगा।"

गामू कितने ही लड़के लड़कियाँ डिप्टी साहबके घर लाकर मुसलमान बनाता गया। डिप्टी साहबकी बीबी हिन्दू लड़कियों

को दीने मुहम्मदी की खूब तालीम दिया करती थीं। वह अरब के रेगिस्तानों का वर्णन, वहाँ के हसन हुसैन के किस्से आदि आदि मुसलमानों के इतिहास सुनाकर उन्हें इस्लाम में पक्का करती रहती थीं। हिन्दू घरानों की लड़कियों को यह अपने ही घर में लौंडी बना रखती थी।

अकस्मात् आगरे में हैज़ा फूट पड़ा। सब लोग अपने २ बचाव को बाहर भागने लगे। डिप्टी साहब की बीबी भी आगरा छोड़ने की तय्यारी कर चुकी थीं कि भोजन करके पानी पिया और एकदम वमन हुआ, कुछ ही देर में एक दस्त हुआ बस, एकदम डाक्टर बुलाये गये। सबने कहा कि हैज़ा है और बचना कठिन है। बात की बात में रोगिणी के प्राण निकल गये। डिप्टी साहब का हँसता हुआ घर मातम का स्थान बन गया। डिप्टी साहब रोने लगे। जनाज़े को धूमधाम से सजाया गया। डिप्टी साहब के साथ गामू और तीन नौकरों ने जनाज़ा कब्रस्थान में लेजा कर दफ़नाया। घर को सूना देख सब नौकर चाकर और लौंडियाँ भाग गये। डिप्टी साहब कब्रिस्तान से लौटकर आये तो घर सूना पाया। "हाय"! कहकर मूर्च्छित होकर पलंग पर गिर पड़े। गामू ने घर को एकान्त देख कर होश में लाने के बहाने से डिप्टी साहब को संखिया की एक पुड़िया जबरन चटा दी। बस खाते ही बेहोशी में ही डिप्टी साहब को दस्त और कै होने लगे। हैज़े और संखिया खाये हुए रोगी के लक्षण प्रायःमिलते हैं। किसी

ने गामू पर सन्देह भी न किया और डिप्टी साहब को भी गामू ने परलोक पहुंचा के ही छोड़ा।

गामू चुप के से सब माल असबाब घर से निकाल कर भाग गया। डिप्टीसाहब के कुटुम्ब में एक मात्र अठारह साल की लड़की थी, जिस का विवाह लखनऊ हुआ था। वह अपने ससुराल में ही थी, जब डिप्टी साहब के घर का इस प्रकार नाश हो गया।

एक मास के बाद आगरे में फिर चहलपहल होने लगी। लोग वापिस घरों में आ गये। नादिरा, डिप्टी साहब की लड़की भी घर में आकर सर्वनाश को देखकर दिल थाम कर रह गई। ईश्वर के नियम के साथ आदमी कैसे लड़ सकता था। धीरे धीरे नादिरा आगरे में मन लगाने पर मज़बूर हुई। उस के पति लखनऊ के प्रसिद्ध जज थे। नादिरा को संगीत से बड़ा प्रेम था। उसने बचपन में संगीत की विशेष शिक्षा पाई थी।

डिप्टी साहब के घर के साथ एक कश्मीरी पंडित सबइन्स-पैक्टर पुलीस अभी २ आकर बसे हैं। उन के तीन कन्यायें हैं। उन को कन्याओं की शिक्षा का बड़ा ध्यान है। आगरा आने के दूसरे ही दिन उन्हों ने पंडित रमेशदत्त को संगीत सिखाने के लिये अपने यहाँ नियत कर दिया।

पण्डित रमेशदत्त जी जन्म से ब्राह्मण थे। आपने गन्धर्व महाविद्यालय में पाँच वर्ष रहकर संगीत की पूर्ण शिक्षा पाई थी। अभी तक आप की अवस्था केवल २५ वर्ष की ही थी।

आप सुडौल, सुन्दर श्याम रंग के थे। आप प्रायः मन्दिरों में धर्मसभाओं में, आर्य्यसमाज में भगवान के गुण वर्णन करने वाले भजन गाया करते थे। आप लम्बा चोग़ा पहन कर गले में एक डुपट्टा डाल रखते थे, और सिर पर दुपल्ली टोपी रख कर माथे पर तिलक लगाये रहते थे। पण्डित जी इसी वेष से प्रतिदिन काश्मीरी कन्याओं को संगीत सिखाने आया करते थे। एक दिन पंडित जी ने एक ठुमरी सिखानी शुरू की। पंडित जी ने सितार के साथ गाना प्रारम्भ कियाः—

ठुमरी

आन बान जिया में लागी।
रूठ के मत जाओ सँय्याँ।
हाथ जोड़ूं पड़ूं पैय्याँ।
इतनी विनति कान्ह मान आन।

नादिरा अपने मकान की खिड़की के पास आकर संगीत सुनने लगी। रहा न गया, चिक को उठाकर मुंह और कान और आगे को बढ़ा दिये और आँखें फाड़ २ कर संगीत वाले कमरे की ओर झाँकने लगी। पण्डित जी गाने में मस्त थे। उनके सितार के साथ २ कंठध्वनि ऐसी मिल जाती थी कि कभी २ तो पण्डित जी गाना गाते २ चुप होजाते थे और केवल सितार बजती थी, परन्तु सुनने वाले समझतेथे कि पण्डित जी भी गा रहे हैं। उनकी कण्ठध्वनि कोयल से कम न थी। इतना कोमल और बारीक स्वर भगवान जवान स्त्रियों को ही देता

है। पर पण्डित जी के कण्ठ में मधुरता और झनकार स्वाभाविक थे।

नादिरा अपने पड़ोसी कश्मीरी पण्डित के घर की ओर नज़र गड़ा खिड़की में खड़ी संगीत सुनने में मग्न थी। अचानक गामू ने नीचे से नादिरा को देख लिया। परम सुन्दरी नादिरा का स्वरूप देखकर गामू चौंका। सोचा, डिप्टी साहब की लड़की को अवश्य वश में करना चाहिये। बस, चुपचाप दबे पाँव घर के ऊपर चढ़ गया। ऊपर का द्वार बंद था नौकरानी ने पूंछा तो डिप्टी साहब का दोस्त बतला कर द्वार खुलवा लिया।

नादिरा संगीत में मग्न खड़ी थी। गामू ने एकदम जाकर पूंछा।

गामू—प्यारी नादिरा, तुम राजी तो हो? बहुत ही दिनों से तुम्हे देखने की चाह थी। आज तुम्हे घर में देख मुझे बड़ी खुशी हुई है।

नादिरा—(झट घूंघट खींचकर दूर हट गई और उस से डरते २ बोली) मैं आप को पहचानती नहीं हूं, आप मुझे कैसे जानते हैं।

गामू—वाह! मुझे भूल गई! मैं डिप्टी साहब का पुराना दोस्त हूँ। तुम जब छोटी थीं तभी से मैं तुम को बड़ा प्यार किया करता था। तुम कितनी बार मेरे साथ दो घोड़े की

गाड़ी में सैर करने आ चुकी हो ! तुम्हारा ही नाम तो नादिरा है !

नादिरा बड़ी द्विविधा में फंसी। वह कभी भी बचपन में इस के साथ नहीं गई थी, नाहीं, कभी उसने अपने घर में उसे पहले देखा था। नादिरा बड़े संकोच से बोली--

'अब आपका आना कैसे हुआ ?'

गामू--बस, अब डिप्टी साहब भी चल बसे और तुम्हारी माँ भी हैज़े से मर गई है। घर में तुम ही एक मात्र रह गई हो ! तुम अब मुझ से शादी कर लो। मैं तुम से बहुत मुहब्बत करता हूं।

नादिरा--(काँपती आवाज़ से) हैं ! हैं ! खुदा का खौफ़ करो, ऐसा मत कहो ! मेरी शादी हो चुकी है। यह कहकर नादिरा वहाँ से तेज़ी से चली और नौकरानी को बुलाया।

गामू भी कामोन्मत्त था। उसे कर्त्तव्याकर्त्तव्य नहीं सूझता था। नादिरा के पीछे भागा और उस की बाँह पकड़ मकान से नीचे ले जाने का प्रयत्न करने लगा। इस जबर-दस्ती और डर से नादिरा की चीख़ निकल गई। चीख़ सुन-कर घर की नौकरानी दौड़ी। पास के मकान में भी चीख़ें सुनकर संगीत एक दम बंद हो गया। संगीत सिखाने वाले पंडित जी और सबइन्स्पेक्टर साहब भी उसी मकान की ओर दौड़े। जब मकान के ऊपर पहुंचे तो देखा कि नादिरा ज़मीन पर बेहोश पड़ी है और उसकी गरदन से खून निकल रहा है।

पास ही नौकरानी ज़मीन पर पड़ी है और चिल्ला रही है। एक ओर गामू छुरा हाथ में लिये खड़ा है और लाल २ आँखें कर के नादिरा की ओर देखकर अब भी धमका रहा है—

"देखा मज़ा ! गामू की इच्छा पूरी होती ही है। मेरे साथ शादी कर के नादिरा, तू ज़िन्दा रह सकती थी ! मैंने बहुत चाहा कि तू मेरे साथ चलती पर तूने मेरा तिरस्कार किया। मुझ से बचना कठिन है। मेरी इच्छा चाहे जो हो पूरी होती ही है। तेरे बाप को मैंने ही संखिया दिया ! तब मुझे धन की इच्छा थी। तेरे बाप के जीवित रहते वह पूरी नहीं हो सकती थी इसलिये उस को संखिया दिया। अब तुझे अपनी इच्छा-नुसार काम देते न देख तुझ पर वार किया है। (नौकरानी से) ख़बरदार तेरी भी जान मेरे हाथ में है ! अगर किसी को पता लगा तो तुझे भी जान से मार डालूंगा। गामू को कौन पकड़ सकता है !"

गामू दरवाज़े की ओर दौड़ा ! पर दोनों पण्डितों ने यह सब बातें सुन ली थीं और यह पैशाचिक काण्ड देखा था। तुरन्त पैंतरा बदल गामू को पकड़ लिया और पुलिस को ख़बर कर दी !

न्यायालय से अपराध सिद्ध हो जाने के कारण सेशन जज ने गामू को फाँसी का हुक्म दे दिया है। नादिरा की नौकरानी और दोनों पंडितों ने प्रत्यक्ष गवाही दी है। गामू का सारा कच्चा चिट्ठा सरकार को पता लग गया है। जिन

डिप्टी साहब ने गाम्मू को बचाया था उसने उन्हीं की हत्या कर दी ।

इधर नादिरा हस्पताल में पहुंचाई गई । दवा दारु होने से वह दिन २ अच्छी होती गई । दोनों पंडित भी हस्पताल में उस की सेवा आदि का प्रबन्ध ठीक करा आते थे । नादिरा मन ही मन पंडितों पर प्रसन्न थी । लखनऊ से जज साहिब भी आकर दो तीन बार नादिरा को देख गये थे । और छुट्टी न मिलने के कारण उसका सब प्रबंध कर गये थे ।

कुछ दिनों के बाद नादिरा अच्छा होकर अपने घर में आ गई ।

आज फिर पंडित जी उसी गीत को लड़कियों को सिखा रहे थे । नादिरा के कानों में आवाज़ आई--

"आन बान, जिया मैं लागी, रूठ के मत जाओ सैय्याँ ।
हाथ जोड़ूं पड़ूं पैय्यां इतनी विनति कान्ह, तुमसों ॥"

बस, नादिरा व्याकुल हो गई । खिड़की के पास खड़ी होकर सुनने लगी । चित्त न भरा साथ वाले कमरे में घुस गई पंडित जी की सुन्दर मूर्ति सितार के साथ गाती हुई दिखाई दी । एकदम नादिरा आगे बढ़ी । पंडित जी के चरणों में सिर रखा और लोटने लगी । संगीत बंद हो गया । पंडित जी ने एकदम आँखें खोली देखा नादिरा गोदी में लोट रही है आश्चर्य में बोले—

"नादिरा ! यह क्या ? तुम अच्छी होकर कब आई ? यहाँ कैसे आई ? यह क्या कर रही हो ?"

नादिरा आँखें नीची किये कुछ न बोली। वह संगीत पर मोहित थी, पण्डित जी की सेवा से उनकी कृतज्ञ थी सब से बढ़ कर पंडित जी की भव्य मूर्त्ति पर अनुरक्त थी। वह क्या कहती। एक बार आँखें तिरछी करके कातर भाव से पंडित जी को देखा और लिपट गई।

पंडित जीने कहा, "छिः छिः ! नादिरा ! यह क्या कर रही हो ? अपने आप को ऐसा दीन क्यों बना रही हो ?" ऐसा कहकर पंडित जी हटकर बैठ गये।

नादिरा कुछ तिरस्कृत सी होकर बोली--मैं नादिरा बच्ची नहीं हूं। सब कुछ समझती हूं कि मैं क्या कर रही हूँ। मैं अपने को आप के चरणों में सदा के लिये अर्पण करने आई हूं।

पण्डित जी--नादिरा यह क्या ? तुम विवाहिता हो !

नादिरा--मैं जानती हूं मैं विवाहिता हूं। मेरे वर्तमान पति जज हैं। वह मुझे प्यार भी शायद करते हैं। पर वह शादी मेरे माँ बाप ने की है। मैंने अपनी इच्छा से नहीं की।

पंडित जी--तब भी तुम्हें अपने पति का ही ध्यान होना चाहिये। पर-पुरुष को देखने में भी पाप है। हम हिन्दू लोग तो पर-पुरुष के चिन्तन करने में भी नारी को सतीत्व से गिरा हुआ समझते हैं।

नादिरा—नहीं महाराज, मैं मुसलमानी हूं। अभी हिन्दू नहीं हूं। मेरे मज़हब में नारी पुरुष की पत्नी नहीं, वह लौंडी है। वह जैसा चाहे पाप करे ! हमें हमारे पति तुच्छ कीट समझते हैं ! हमारे यहाँ सदाचार क्या वस्तु है ? इसका उल्लेख नहीं। आपका मज़हब सच्चा है। मुझे बचपन से ही अपने मज़हबसे घृणा हो गई है। मेरे बाप ने इसी मज़हब में होने के कारण उस दिन न्याय को तिलाञ्जलि दे दी। सब हिन्दुओं को क़ैद कर दिया और सब मुसलमानों को छोड़ दिया।

वास्तव में मुसलमान सभी अपराधी थे। मेरी माता ने अनेक हिंदू कन्याओं और विवाहिता रमणियों को मुसलमान बनाना चाहा परन्तु दिल से एक भी मुसलमानी नहीं बनी। मैं उन से ही हिन्दू धर्म की महिमा सुनती रही हूँ। मैं हिन्दू बनना चाहती हूं। महाराज, मुझे हिंदू बनाइये।

पंडित जी सुनकर अवाक् रह गये। मित्रों से सलाह की, आर्य समाज से पूछा गया। समाज तय्यार थी। परन्तु समाज ने कहा कि कन्या यदि बालिग़ हो तो उस का प्रार्थना पत्र पहिले आना चाहिये। नादिरा ने झट प्रार्थना पत्र लिख दिया शुद्धि हो गई। आर्य समाज ने उसका नवीन नाम सरस्वतीदेवी रक्खा।

शुद्धि संस्कार समाप्त हुआ। समाज मन्दिर में पण्डित रमेशदत्त भी बैठे ही थे। सरस्वती देवी खड़ी हो गई और मिठाई सब को बाँट गई। पंडित जी ने भी सब के साथ मिठाई

को खबा था सरस्वती मिठाई बाँटते २ कनखियों से पण्डित जी को मिठाई खाते हुए देख रही थी। मिठाई बाँट चुकने पर सरस्वती ने हाथ धोकर पण्डित रमेशदत्त के चरणों पर सिर रक्खा और बोलीः—"महाराज। मुझे अब स्वीकार कीजिये। मुझे अपनी अर्धाङ्गिनी बनने का अधिकार दीजिये।"

रमेश—नहीं नहीं, नादिरा, तू मुसलमानी है, मैं हिंदू हूं। तेरा मेरा विवाह असम्भव है।

सरस्वती—नहीं महाराज, अब ऐसा कहना मुझे गाली देना है मैं हिन्दू हूं और मेरा नाम सरस्वती है।

रमेश—तुम्हारी शादी हो चुकी है। पति एक बार ही हिन्दुओं के होता है दो बार नहीं! शादी क़ानून से भी विरुद्ध है।

सरस्वती—मैं हिन्दू हूं और हिन्दू-नारी सरस्वती की शादी अभी तक नहीं हुई है। कानून से मेरी शादी होसकती है। आप ही बताइये हिन्दू सरस्वती का विवाह कब हुआ है? महाराज सच कहिये।

रमेश—तुम्हारी शादी लखनऊ के जज से नहीं हुई?

सरस्वती—महाराज, वह मुसल्मानी नादिरा की शादी मुसलमान जज से हुई थी। हिन्दू सरस्वती का विवाह संस्कार हिन्दू से ही हो सकता है। मैं आप को अपने लिये चुनती हूं।

पण्डित रमेशदत्त जी के पास कोई उत्तर नहीं था। वह विवश हो गये। मित्र मण्डली ने वहीं समझा बुझा कर उन का

विवाह-संस्कार रात को समाज-मन्दिर में करा दिया। वह अविवाहित थे। सुन्दरी सरस्वती अर्द्धाङ्गिनी बनी। हिन्दू लोग कुछ प्रसन्न भी हुए, कुछ नाराज़ भी हुए।

एक नाराज ब्राह्मण ने सरस्वती से कहा तू तो मुसलमानी है और तेरा नाम नादिरा है।

सरस्वती कड़क के बोली मैं हिन्दू हूं। मेरा नाम सरस्वती है।
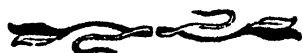
पितृ द्रोह

(१)

सेठ मुन्नाभाई बड़े रईस थे। अहमदाबाद में सब से बड़ी मिल आप ही की चलती थी। गुजरात के धनी लोगों में सब से अधिक धन आप ही के पास समझा जाता था। परन्तु फिर भी मुन्नाभाई का नाम सुन कर धनी दरिद्र सभी प्रकार के लोग नाक चढ़ाते थे, घृणा से मुंह फेर लेते थे। मुन्नाभाईका नाम सुनते ही ग़रीब को उस दिन पेट भर भोजन मिलने का भी सन्देह हो जाता था। बात यह थी कि इतने अमीर होकर भी वे दान पुण्य कभी न करते थे। उन्हों ने एक पैसा भी किसी समाज सेवा के कार्य्य में नहीं दिया था। स्कूल जाते हुए उन

के दोनों पुत्रों को बड़ी कठिनता से दो दो पैसे उन की माता दे पाती थी। एक दिन लड़कों ने गाड़ी जुड़वा के सैर करली, बस सेठ जी ने साईस को ही मौकूफ़ कर दिया। लड़कों को उपदेश दिया कि गाड़ी जल्दी बिगड़ जाती है और घोड़ों को भी आराम देना चाहिये। मिल के मज़दूरों को वेतन देते समय वे सात २ बार स्वयं गिनकर रुपया देते थे। एक बार सरकार ने चन्दा देने का ज़ोर दिया तो आपने बड़ी कठिनता से विवश हो पाँच हज़ार की भेंट दी थी। उस से पूर्व और पीछे कभी एक पैसा भी किसी फंड में दान नहीं दिया। अभिप्राय यह कि सारा गुजरात जानता था कि वे सब से बड़े गुजरात के सेठ हैं, लगभग चार करोड़ रुपया उनके नाम जमा है परन्तु हैं भी सब से बड़े कंजूस। कंजूसी में उन से आगे नंबर किसी का नहीं था।

सेठ साहब के परिवार में उन की धर्मपत्नी, दो पुत्र, और एक नौकर था। मकान पुरखाओं का बना बनाया विशाल था पर उस में सजावट का कोई सामान न था। गुजरात का सब से बड़ा सेठ इस प्रकार जीवन विता रहा था।

भादों की अमावस की रात को बड़ी घोर वृष्टि हुई। उस दिन समुद्र में तूफ़ान भी आया सुनते थे। रात भर घोर वर्षा और हवा का तूफ़ान चलता रहा। सेठ साहब वृद्ध थे। रात को हवा लग गई। छाती में दर्द हो गया। दर्द क्रमशः बढ़ते २ इतना उग्र हो गया कि साँस लेना कठिन हो गया। जब ऐसी अवस्था हुई तो सेठ साहिब ने बड़े पुत्र को बुला कर कहा-

"राजू ! पुत्र, अब मेरे जीने की कोई आशा नहीं. तू वैद्य जी को बुलाला। परन्तु एक बात तुझे समझानी है। यदि वैद्य जी जवाब दे जाँये तो यह " साँकली " मेरे हाथ से संकल्प करा दी जो। मैंने सारी आयु भर कोई दान पुण्य नहीं किया है। अब इस साँकली को दान करके परलोक में सद्गति पाऊंगा।

राजा भाई सिर झुकाकर वैद्य को बुलाने गया। प्रातःकाल ६ बजे वैद्य जी पधारे। रोगी को महाकष्ट में देख वैद्य जी ने सेठ से कहाः—

" सेठ जी ! जो दान पुण्य करना हो अब कर लीजिये। दवाई अपना प्रभाव अब कुछ न कर सकेगी तो भी मैं अन्तिम उपाय करता हूं। "

यह कह कर वैद्य जी ने "मकरध्वज" की एक रत्ती मात्रा अदरक के रस के साथ देने को राजू भाई से कहा।

सेठ मुन्नाभाई ने वैद्य जी की बातें सुन कर और अपनी अवस्था असाध्य समझ कर वैद्य जी को संकेत से दवाई देने को बंद कर दिया और राजू भाई से इशारा किया कि मेरी साँकली लाओ।

राजू ने पिता की अवस्था देख कर निश्चय कर लिया कि अब सेठ जी तो बच नहीं सकते तो साँकली भी क्यों पुण्य करावें। राजू जानता था कि साँकली महा मूल्य मोती हीरा की बनी माला थी। उस का दाम पाँच लाख से कम न था।

पिता का संकेत पा कर राजू उठा और उस ने पिता के सामने तिल और गुड़ की बनी हुई गजक ला रखी।

गुजराती भाषा में साँकली माला को भी कहते हैं और तिल गुड़ से बनी गज़क को भी तिल साँकली कहते हैं। राजू ने माला को देने की जगह तिल गुड़ की बनी गज़क सेठ को देदी।

सेठ ने गज़क को देख कर क्रोधित हो कर माला लाने को संकेत किया पर पुत्र ने सुना ही नहीं। जब सेठ ने पुत्र की इतनी नीचता, कृपणता और लोलुपता देखी तो कुछ न कह कर वैद्य जी की दवाई चाट गया। दवाई ने अन्दर जाते ही अवस्था अच्छी करनी आरम्भ की।

सेठ का श्वास कुछ ठीक चलने लगा, कफ़ बोलना कम हुआ, दर्द में भी कमी हुई। सेठ ने वैद्य जी से और दवा देने को कहा क्रमशः वैद्य जी के इलाज से सेठ अच्छा होने लगा।

(३)

सेठ जी कुछ ही दिन में अच्छे हो गये। अच्छे होते ही सेठ जी ने बड़ा दान पुण्य किया। मिल के नौकरों को इतना इनाम दिया कि सेठ के मरने पर जितनी प्रसन्नता उनको होनी थी उस से अधिक अब सेठ के जीवित रहने से हुई। सेठ जी के रंग ढंग बीमारी के बाद सर्वथा बदल गये।

परन्तु कुछ ही दिन बीतने पाये थे कि उन की धर्म पत्नी का प्रसूता होने से बच्चे सहित देहान्त हो गया। सेठ जी और भी घबरा उठे। सारे संसार में उन का अपना कुछ न रहा। पुत्र थे, पर वे सेठ के नहीं समझने चाहिये वे तो धन के थे। सेठ जी ने सेठानी की अन्तिम क्रिया बड़ी धूमधाम से कराई। इसके

अगले दिन ही अपनी सारी सम्पत्ति की विल लिखा दी मिल की सम्पूर्ण आय को ख़र्च करने का अधिकार सोशल लीग को दे दिया। अपने सब मकान और ज़मीन को व्यापार शिक्षा के लिये एक बड़ा कालिज खोलने के लिये दे दिया। शेष रुपये को अपने साथ लेकर अहमदाबाद से कहीं को प्रस्थान कर दिया—

पुत्रों के नाम फूटी कौड़ी भी नहीं लिखी।

(४)

काशी में एक बड़ी हवेली के नीचे हज़ारों ग़रीब इकट्ठे हैं। रोज ११ बजे इन को पूड़ी और मोहनभोग मिलता है। सैकड़ों ब्राह्मण हवेली में कथा वांचते हैं। स्थान २ पर वेद पाठी ब्राह्मण वेद पाठ करते हैं। हज़ारों विद्यार्थी इसी हवेली में रहते और पुस्तक वस्त्र तथा भोजन पाते हैं। सेठ मुन्नाभाई नित्य हवेली के शिखर पर बैठ कर बारह बजे तक कथा सुनते तथा लोगों को दर्शन देते है।

एक दिन दरबान ने सेठजी से ऊपर जाकर कहा "महाराज दो जवान लड़के अपना नाम राजाभाई और रामूभाई बताते हैं तथा अपने को आप का पुत्र कहते हैं। उन को रोकते हैं तो वे हम से धक्का मुक्की करके ऊपर आते हैं बड़ी कठिनता से रोक कर आया हूं।

सेठ ने क्रोध पूर्वक कहा—मेरा कोई पुत्र नहीं हैं। उन्हें धक्के देकर निकाल दो।

अन्त में पाँच छः बनारस के बड़े सेठों को इस समाचार का पता लगा तो सेठ के दोनों पुत्रों को सेठ जी के पास लाये सेठ से अनुनय विनय करके तथा क्षमा मगवा कर बड़ी कठिनता से पाँच पाँचसो रुपये मासिक दोनों पुत्रों के नाम करवा दिया। परन्तु साथ ही आज्ञा दी कि बनारस में ये न रहें। कहीं रहें।

इस प्रकार महा कंजूस सेठ मुन्नाभाई एक छोटीसी घटना से उदार दानी बन गया। बनारस में सुनते हैं कि उसकी सम्पत्ति के सूद से आज भी अनेक पंडित, विद्यार्थी तथा गरीब भोजन वस्त्र, पुस्तक पाते हैं।
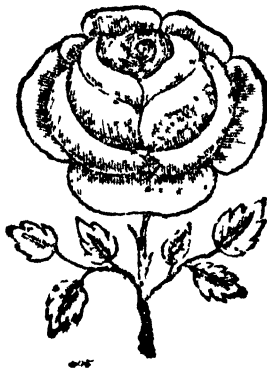
रोशनआरा की शुद्धि

(नोट-शिवराज विजय के आधार पर)

" क्या कहा ? पहाड़ी चूहा ! इसी से तो मेरे अब्बा डरते हैं। वे क्यों डरेंगे, इस में ऐसी कौन डरावनी बात है। छोटी सी दाड़ी है, सुन्दर मुख है, नाटा क़द है, मस्त आँखें हैं। यह तो किसी फ़रिश्ते की तसवीर है। यह बेचारा लड़ाई क्या लड़ता होगा ? "

अन्तःपुर के विलासभवन में शाहन्शाह औरंगज़ेब की पुत्री रोशनआरा अभी सोकर उठी ही थी। सायंकाल के ४ बजे का समय था। लौंडी ने एक तसवीर अपने हाथ में लिये उस कमरे में प्रवेश किया। राजकुमारी को जगी हुई देख कर उस ने आँचल में तसवीर को छिपाना चाहा। पर राजकुमारी ने देख लिया। बहुत आग्रह करने पर डरते २ लौंडी ने शिवाजी महाराज की तसवीर को रोशनआरा के हाथ में दे दिया। राजकुमारी के नाम पूछने पर पीछे हटते २ डरी हुई लौंडी ने धीरे से कहा कि उसका "नाम पहाड़ी चूहा" है।

लौंडी डर रही थी कि अब मुझे सज़ा मिलेगी। राजकुमारी जरूर पूछेगी कि तू ने यह तसवीर कहाँ से ली ! क्यों ली ? तू हमारे दुश्मन की तसवीर घर में रखती है इसलिये तेरी खाल खिंचवादी जावेगी या कुत्तों से फड़वादी जावेगी ! इसी कारण वह डर से पीछे २ हटती जा रही थी।

परन्तु रोशनआरा ने उस के हाथ से तसवीर लेकर ध्यान से देखी और बार २ नाम पूछने पर आग्रह किया। लौंडी के मुंह से तसवीर का नाम "पहाड़ी चूहा" सुनकर रोशनआरा चौंकी और बड़े विस्मय से उसने ऊपर लिखे शब्द कह डाले।

रोशनआरा तसवीर को देखती जाती थी और ऊपर के शब्द आप से आप कहती जारही थी। कहते २ राजकुमारी को स्वयं कुछ विचार उत्पन्न हुआ कि लौंडी को यह शब्द न सुनने चाहिये। इस से अनर्थ हो सकता है। ऐसा सोचते ही लौंडी को बाहर जाने का इशारा किया। लौंडी अपनी जान बची समझ बाहर निकल गई।

अब रोशनआरा कमरे में अकेली थी। उस ने तसवीर को अपने सामने रक्खा। स्वयं चारपाई पर बैठ गई। तसवीर को देखती जाती थी और कुछ बड़बड़ाती जाती थी। अस्पष्ट शब्दों में वह कुछ बोलती थी और चारों ओर सतर्क हो कर देखती जाती थी। बहुत देर तक ऐसा होता रहा। अकस्मात् उसने तसवीर को उठाया और बड़े दर्पण के सन्मुख जा खड़ी हुई। अपने बालों को बड़ी देर तक संभाला। फिर सुगन्ध लगाई आँखों में अंजन लगाया। गले का आभूषण ठीक सजाया और पान का बीड़ा बिना लौंडी को बुलाये खुद लगा मुंह में रक्खा फिर दर्पणके सामने खड़ी होगई। कभी तसवीरको देखती तो कभी अपनी सूरत को दर्पण में देखती। निरन्तर घण्टे भर तक वह अपने शरीर को तसवीर के योग्य बनाने की चेष्टा करती रही परन्तु कुछ न कुछ त्रुटि उसे हर बार ठीक करनी

ही पड़ी। अन्त में उस ने यह कहते हुये यदि मैं इस जैसी सुन्दर नहीं हूं तो भी दुनियां में तो सब से सुन्दर हूँ।' पलंग का आश्रय लिया।

तसवीर को अपने साथ लिये हुये अभी पलंग पर रोशन-आरा लेटी ही थी कि दूसरी लौंडी ने कमरे में प्रवेश किया। उसके बिना पूछे ही रोशनआरा ने हुक्म दियाः—

"आज मेरे सिर में दर्द हैं आज भोजन नहीं करूंगी!"

लौंडी—"हजूर! दवाई के लिए खबर भेजदू'?

रोशन—"नहीं नहीं? सुबह तक मैं खुद ही अच्छी हो जाऊंगी। दवाई की जरूरत नहीं, और किसी के अन्दर आने की भी जरूरत नहीं! जा।"

लौंडी के जाने पर रोशनआरा धीरे २ कहने लगी। "इस तस्वीर ने मेरे सिर में दर्द सचमुच पैदा कर दिया है। भूख अभी से बन्द करदी है" देखूं रात भर में इस की दवा निकाल सकती हूं या नहीं।

महाराज जयसिंह को शिवाजी के विरुद्ध औरंगज़ेब ने भेजना सोचा है। इसी घरेलू युद्ध के विषय में तोरणदुर्ग में बैठे हुए बूढ़े पुरोहित देवशर्म्मा चिन्तित हुये गौरसिंह से वार्तालाप कर रहे थे। दोपहर का समय था। थोड़ी देर में ही कोई नवीन सन्यासी दुर्ग में प्रविष्ट होकर गोरसिंह को आशीर्वाद कह कर बोलाः—

आयुष्मान्! अति आवश्यक काम के लिये आया हूँ। ध्यान से सुनिये। अभी दो मील की दूरी पर औरंगज़ेब की

कन्या रोशनआरा अपने पिता को मिलने गोलकुण्डे इसी जंगल से जा रही है, जो उचित समझो करलो ! इतना कह कर सन्यासी अन्तर्धान हो गया।

सन्यासी की इस अनोखी बात को सुन कर गौरसिंह चकित हो कर प्रसन्नता से बोलाः—

ओहो ! दिल्ली के बादशाह की कन्या ! आज औरों की कन्या हरण करनेवाले दुष्ट औरंगजेब को पता लगेगा कि ऐसे कर्म्म किस प्रकार से हिन्दुओं के मर्म छेदन करते हैं ! आज तो स्वयं ही दुष्ट औरंगज़ेब की कन्या मृगी की तरह महाराष्ट्र सिंहों के कन्दरा द्वार पर आपड़ी है।

ऐसा सोच कर, वृद्ध देवशर्मा से आशीर्वाद ले, सौ योधाओं को सन्यासी का वेष धरा अपने साथ लेकर उसी ओर गौरसिंह ने प्रस्थान किया । उन पहाड़ी रास्तों के पास पहुंच कर गौरसिंह ने पालकीको दूर से देखकर सब साथियों को जंगल में छिपा दिया। रास्ते में बने हुये एक जलाशय में थोड़ी विष घोल दी, पास के लगे हुए फूलों में भी विष लगादी और स्वयं एक झाड़ी में छिप कर गौरसिंह बैठा रहा।

स्वभाव से सुन्दर दृश्य और जलाशय को वहाँ देख कर थके हुये रोशनआरा के पालकी के कहार और फौजी रसालदार वहीं आराम के लिये ठहर गये। उसी समय एक बूढ़ा सन्यासी एक पिटारी लेकर उन के बीच में से गुज़रा । मुसलमान सिपाहियों ने मार पीट कर उस से पिटारी छीन ली ! देखा

लड्डू हैं। सब ने दो २ लड्डू बाँट कर खाये ऊपर से जलाशय का पानी पी लिया। बस फिर क्या था ? सभी बेहोश होकर सो गये । अवसर पाकर सभी सन्यासी जंगल से निकल, सिपाहियों की पेटियाँ, पहिन घोड़े खोल सवार होकर पालकी को उठा, तोरण दुर्ग में रोशन आरा को ले आये !

(३)

रोशनआरा इतने दिन से सजे हुये महल में पराये घर में रहती थी पर उस को अभी तक उस के आतिथ्य करने वाले का नाम पता नहीं लगा था। प्रतिदिन सुगन्धित जल स्नान के लिये, कपूर चन्दन केसरादि से युक्त उबटना मलने के लिये अंगराग, मस्सी, अंजन, सुन्दर सुनहरी काम किये हुये रेशमी वस्त्र, तथा बीसों दासियाँ सेवा में सदा उपस्थित देखकर उस का अन्तरात्मा सन्देह में पड़ा था कि यह क़ैद है या स्वर्ग। इस के बनाने वाले स्वामी का भेद उसे अभी तक पता नहीं लगा था।

एक दिन महल के ऊपर खड़ी हुई रोशनआरा बन पहाड़ों की शोभा देख रही थी। अचानक उस की दृष्टि दूर से उड़ती हुई धूल पर पड़ी। देखा एक नाटे क़द का साँवला युवक घोड़े पर चढ़ा आगे २ राजसी ठाठ से आ रहा है, पीछे २ घोड़ा दौड़ाये हुये सैकड़ों सैनिक आ रहे हैं। राजकुमारी देर तक देखती रही फिर नीचे आगई।

कुछ देर के बाद वही युवक राजकुमारी के सामने आकर खड़ा हो गया।

राजकुमारी ने पर पुरुष को इस प्रकार से बिना रोक टोक सामने आया देख आश्चर्य किया और लज्जावश मुंह नीचे कर लिया !

युवक—राजकुमारी ! क्या आप सुखी हैं, यहाँ कोई कष्ट तो नहीं ?

राजकुमारी—(संकोच से) अच्छी प्रकार से जाने बिना मैं आप से कुछ नहीं कह सकती। (साथ ही उस की सूरत तेजस्वी देख कर उस से दबते हुए) आप का शुभ नाम क्या मैं जान सकती हूं ?

युवक—मुझे आपके पिता 'पहाड़ी चूहा' कहा करते हैं !

रोशन आरा—(तस्वीर से सूरत मिलती देख अति लज्जा से) क्षमा कीजिए। आप ही महाराष्ट्रपति श्री·········हैं ? (उठकर ताज़ीम से सिर झुका कर खड़ी ही रहती है)

शिवाजी—हाँ भद्रे ! मेरा नाम ही शिव है। आप मुझ अकिंचन् को ऐसा मान देकर लज्जित न करें। आप को किसी प्रकार का यहाँ कष्ट तो नहीं !

राजकुमारी-महाराज ? ऐसी बातें पूछ कर आप ही मुझ दासी को लज्जित कर रहे हैं। इतनी सेवा इतना आराम तो शायद अपने घर में भी मुझे नहीं मिला। आप.........।

शिवाजी—कहिये २ रुक क्यों गई। जो आज्ञा आप की होगी इसी समय पालन होगी।

राजकुमारी—(संकोच से रुक २ कर) आप तो इतने

सज्जन, गुणी, वीर और श्रेष्ठ हैं भला यह लूट मार! क्या आप को शोभा देती है?

शिवाजी—लूट मार? (सच है औरंगजेब ने लूट मार कर पहाड़ों में छिप जाने के कारण ही मेरा नाम लुटेरा पहाड़ी चूहा रक्खा है! ऐसा मन में सोच कुछ क्रोधको रोककर, कौन लूटता है? राजकुमारी! आप के पिता ने सहस्रों ब्राह्मणों के यज्ञोपवीत् तोड़ कर उनका धर्म लूटा है! सहस्रों मन्दिरों का नाश किया है! सहस्रों वेद शास्त्र पुराणों को धूल में मिलाया है अनेक कन्याओं का सतीत्व नाश किया है। आप के पिता के राज्य में किस २ वस्तु की लूट नहीं हुई है! धर्म, धन, लज्जा, विद्या, यश सब लूटा गया है! जज़िया कर आप के ही राज्य में लगा है! गोहत्या आप के ही राज्य में होती है! चोटी काट-कर निरीह पुत्रों को दिन दाड़े यवन आप के राज्य में ही बनाया जा रहा है। केवल हिन्दुओं को ही नहीं अपने ही पिता का राज्य धन लूट कर उन्हें क़ैद कर रक्खा है। दारा का सिर किसने काटा है? बाक़ी तीनों भाइयों का भी सर्वस्व किसने हरा है? लूट मार!! राजकुमारी आप के कोमल हृदयको इस से चोट पहुंची होगी! पर आप ही न्याय कीजिए? क्या शिवराज ने कभी किसी विधर्मी को जबरन् हिन्दू बनाया! किसी धर्मात्मा यवन को लूटा? किसी मसजिद को गिराया! अथवा किसी यवन कन्या का सतीत्व नाश किया? आप ही इतने दिनों से यहां हैं क्या कोई ऐसी बात आप ने कभी देखी

जिस से मर्यादा टूटी हो ! फिर लूट मार का दोष देना क्या आप को उचित है ?

रोशनआरा—(लज्जा से सिर नीचा करती हुई परन्तु शिवाजी की वाग्भंगी पर मोहित हुई २) क्षमा कीजिए ? आप को मेरे कारण दुःख पहुंचा। वास्तव में मेरे पिता को आप के असली गुणों का अभी तक पता नहीं वह आप से प्रेम करेंगे। (मुस्करा कर) परन्तु मुझे कब तक क़ैद में रहना होगा ?

शिवाजी—क़ैद ? कैसी क़ैद ! आप स्वतन्त्र हैं। जब चाहें जहाँ चाहें जा सकती हैं। कुमार मुअज़्ज़िम को भी मैंने इसी लिए अपने पास रक्खा है कि संधि की शर्तें आप के पिता से हो सकें।

रोशन०—क्या कहा ? महाराज ! मुअज़्ज़िम भी आप की क़ैद में हैं ! नहीं २ क़ैद नहीं, आप का मेहमान है। उसे कैसे आप ले आये ?

शिवाजी—मेरे पास गौरसिंह बड़ा होशियार सिपाही है। उसने परसों राजकुमार मुअज्जम का यहाँ आना सुनकर बड़ा कौतुक किया। राजकुमार को गाने का शौक़ है ऐसा जान कर वह बड़ी सुन्दर पद्मिनी वैश्या बनकर साथ में पाँच सिपाहियों को तबला आदि बजाने वाले का वेष पहनाकर पालकी में बैठ कर राजकुमार के कैम्प में गया। वहाँ उस का स्वागत हुआ। जब राजकुमार अकेला रह गया तो पद्मिनी के अधिक पास होकर पानगोष्ठी का प्रार्थी हुआ। पद्मिनी ने शराब तो न छुई पर राजकुमार को पान का बीड़ा दिया।

आतेही कुमार निद्रित होगया। उसी समय पद्मिनी ने अपने कपड़े तो कुमार को पहनाये और राजकुमार के कपड़े एक तकिये को पहना कर वहीं सजा दिया। बस पालकी में बैठ लोगों की आँखों में धूल झोंक पहरे से निकाल राजकुमार को यहाँ ले आई। आप के साथ ही महल में राजकुमार मुअज्जम भी रहते हैं। सन्धि होते ही दोनों को घर पहुंचाने में देर न होगी। वह भी आज सायंकाल आप से मिलेंगे।

रोशन--ओहो! आप बड़े छलिया हैं। मुझे भी और भाई को भी निकाल लाये! (अनुरक्त हुई २) यदि आपको भी कोई निकाल ले जावे? (हँसकर) बुरा न मानियेगा! महाराज आपने मुझे हरा है यदि मैं भी आप को ......।

शिवाजी--भद्रे! मैं समझा नहीं? स्पष्ट कहें?

रौशन—महाराज, स्पष्ट क्या कहूं। जिस दिन से आप की तसवीर को देखा है, जिस दिन से पिता जी के मुख से यह सुना है कि आप और राठौर दुर्गादास दोनों से ही वह इस दुनियाँ में डरते हैं। तभी से मैं आप पर मर रही हूं? आप का ही चिंतन, आप का ही स्मरण, आप के ही स्वप्न लेती रही हूँ! महाराज क्यो आप मुझे ग्रहण ....।

शिवाजी--(भाव को बदलते हुए) भद्रे! ऐसा न कहो कहाँ भारत सम्राट और कहाँ पहाड़ी चूहा! इतने छोटे से आदमी को ऐसा महादान कैसे मिल सकता है? मैं तो इस प्रसंग की कल्पना भी नहीं कर सकता। आप के पिता इस समय किस प्रान्त में गये हैं?

रोशन--प्रसंग न छोड़िए महाराज ! यवन कन्या होने के कारण आप ने मेरी बात पर ध्यान ही नहीं दिया। क्या आप के परमेश्वर भी यवन और हिन्दू का पक्षपात करते हैं ! महाराज ! मेरी अभिलाषा को एकदम लौटा न दीजिए। मैंने अपना जीवन आपके अर्पण कर दिया है, इसे पत्थर पर न पटकिये ! क्या राजकुमारी का राजा को चाहना संसार में नया है ? कहिये कहिये ! कि आप हिन्दू हैं ? इस कारण मुझे स्वीकार नहीं करते (पैरों पर सिर रखती है)।

शिवाजी—नहीं कुमारी ! यह बात नहीं। मनुष्य जाति एक है। कार्य ही से संसार में उच्चता नीचता हम मानते हैं। मैं बीरबल की तरह अकबर को गधे की गौ बनाने की झूठी विडम्बना कर के हिन्दुधर्म को संकुचित नहीं बनाना चाहता। मैं तो मुसलमान और हिन्दू दोनों को एक मनुष्य जाति समझ कर कर्म से और गुणों से उच्चता देता हूं। जैसे आप के पिता हिन्दुओं की चोटी काट कर कलमा पढ़ा कर मुसल्मान बनाते हैं वैसे ही मैं भी चोटी रखा गायत्री पढ़ा कर हिंदू बना सकता हूं। मैंने कईयों को बनाया भी है। यह बात न कहो ! राजकुमारी का राजा को चाहना धर्म विरुद्ध और लोकाचार विरुद्ध भी नहीं पर नीति विरुद्ध अवश्य है। आप मेरे घर में अतिथि हैं। इस धरोहर को आप के पिता के पास सुरक्षित पहुंचाना यही मेरा धर्म है। कहिये उचित है या नहीं ?

इसी समय अचानक महल में आग लग गई, रोशनआरा

इसी बहाने डर कर शिवाजी को लिपट गई। और चिल्लाने लगी महाराज मुझे बचाइये, बचाइये !

राजा जयसिंह ने शिवाजी से सन्धि कर ली। रोशनआरा और मुअज्जम को लौटा दिया गया। शिवाजी को समाज से मिलने के लिए दिल्ली आना पड़ा। औरंगजेब के अपमान से शिवाजी दरबार में ही गरज उठे। अगले दिन से औरंगजेब ने शिवाजी को नज़र बंद कर दिया। शिवाजी के चारों ओर कठोर पहरा लगा दिया गया !

आधीरात का समय था शिवाजी पीछे के बाग़ में टहल रहे थे। सब ओर सुनसान थो। अचानक एक सन्यासी बाग़ में सामने आकर खड़ा हो गया। शिवाजी इस नवयुवक सन्यासी को देख चकित से हो गये।

संन्यासी--(आगे बढ़ कर) यदि अपराध क्षमा हो तो क्या मैं पूंछ सकता हूं कि आप इस समय क्यों टहल रहे हैं ?

शिवाजी---आप कौन हैं कहाँ से आये हैं ? मेरे सिर में दर्द हैं इस कारण यहाँ टहलता हूं।

संन्यासी--(रूप बदलते हुए) अपराध क्षमा हो! मैं राजकुमारी की सखी हूं। बड़ी कठिनता से यहाँ तक आई हूं। उस की कुछ सुध लीजिये।

शिवाजी--मैं क्या कर सकता हूं !

सखी--विचित्र प्रश्न हैं ? जिस के लिये राजकुमारी इतना प्यार करती हैं, सदा जिस के ध्यान में सूख कर काँटा हो गई हैं ! वह क्या कर सकता है ! खूब जवाब दिया आपने !

शिवाजी—ओहो ! रुष्ट हो गई ! भद्रे ! जब तक सम्राट स्वयं राजकुमारी को अनुमति न दें विवाह का प्रस्ताव व्यर्थ है।

सखी—आप को तो सम्राट से कुछ मतलब नहीं। सम्राट को पता लग जाये तो राजकुमारी की खाल खिंचवा दे। आप उसे बल से हरकर लेजा सकते हैं। उसने सब भागने का प्रबन्ध कर रखा है। अर्जुन भी तो सुभद्रा को हर ले गये थे।

शिवाजी—तब तो राजकुमारी को पहले शुद्ध होना होगा। क्या वह हिंदू धर्म स्वीकार करेगी ?

सखी—वह हिन्दू बनने के लिये तय्यार है। आप जिस समय कहेंगे वह शुद्ध हो जायगी। उसने माँसाहार और नमाज़ आदि तो तभी से छोड़ दिये हैं जब से वह आप के पास से आई है। रोज नहाती चन्दन लगाती" माला फेरती और अल्लाह की जगह शिव का जप करती हैं। मौलवी उन के कमरे में आने बन्द कर दिये हैं। अब जो थोड़ा बहुत खाती पीती भी है वह दूध चाँवल रोटी आदि हिन्दुओं जैसा भोजन करती है। आप ही ब्राह्मण को बुलालें, शुद्धि जहाँ कहेंगे वहीं कराने को राजकुमारी तय्यार हैं। बस देर न कीजिये। कुछ भी दिन की देर हुई तो राजकुमारी प्राण त्याग देगी। मैं कल इसी समय फिर आऊंगी। अब आप आराम करें। शुद्धि का प्रबन्ध कल ही करें।

अभी २ एक दासी राजकुमारी रोशनआरा के पास एक पत्र दे गई है। पत्र में यह विषय था। 'राजकुमारी !"

मैं दैवबल से आज तुम्हारे पिता के पंजे से छूट कर अपने देश में जाता हूँ। मैंने दो दिन सारी दिल्ली में आप को शुद्ध करने वाले ब्राह्मण ढुंढवाये। परन्तु कोई ब्राह्मण भी आप का शुद्ध करने को तय्यार नहीं हुआ। सब ने यवन को हिंदू बनाना अस्वीकार किया यह सब बाग्बल का दृष्टान्त और तुम्हारे पिता का डर है। नहीं तो ब्राह्मण और ऐसा कह जाय कि हम हिन्दू धर्म का द्वार अमुक के लिए नहीं खोलेंगे! दिल्ली में हिंदू ब्राह्मण ही रहते प्रतीत नहीं होते! मेरे दक्षिण राज्य में क्या कोई ब्राह्मण ऐसा कह सकता है ! एक मुसलमान हुए राजा को मैंने अपने समक्ष शुद्ध कराया है। बस या तो आप दक्षिण देश में आकर शुद्ध हो सकती हैं या दिल्ली में रहते हुए विवाह की आशा ही छोड़ दें।"

कहना नहीं होगा अभिमानि रोशनआरा न दक्षिण जा सकी न विवाह ही हो सका।

गोरक्षक खिष्टान

[प्रथम परिच्छेद]

"जल्दी किवाड़ बन्द करले ! बड़ा अच्छा हुआ जो कोई जान न सका कठिनता से आँख बचाकर यहाँ तक पहुंचा हूं। देखना किसी को पता न लगे। मैं"

'क्या हुआ, क्या कह रहे हो ? एकदम इतना बक गये ! कहीं पागल तो नहीं हुये ऐसा क्या किसी का खून कर आये हो जो छिपते फिरते हो ! सच कहो क्या बात है ? " कल्याणी ने घबराते हुए पति के पास जा कर पूछा !

"जा' जा, पहले किवाड़ बंद कर आ। समझती नहीं क्या हुआ है ! अभी उठी नहीं। ओहो ! औरतों की ज़ात भी कैसी हठी होती है " ऐसा कहते २ पंडित राजनारायण ने उठ कर शीघ्रता से किवाड़ बन्द कर दिया और कुण्डा लगा कर एक छोटी सी चारपाई पर बिस्तरे को खोल लेट गया और ऊपर से पुरानी रज़ाई लेकर मुंह सिर लपेट लिया !

रात का समय था। कल्याणी इस अपूर्व चरित को देख कर घबरा गई। देरतक सोचने पर भी वह न जान सकी कि मेरे पति ने ऐसा क्या कर दिया है जो इतना घबरा रहे हैं। मेरे बार २ पूछने पर भी कुछ उत्तर नहीं देते। हे महादेव ! कुशल रखियो !' कल्याणी ऐसा सोचते २ व्याकुल हो गई न रहा गया तब फिर पति को जगा कर कहने लगा—

"महाराज! कोई दासी ने अपराध किया हो तो क्षमा करो। आज इतने उदास क्यों हो रहे हो? क्या मुझ से कहने में भी कोई अनिष्ट होने की सम्भावना है। कहते क्यों नहीं?"

पण्डित राजनारायण ने रज़ाई और सिर पर खींच कर कहा, 'मुझ पर कम्बल डाल दे। बड़ी सरदी लग रही है। एक गिलास पानी ला दे।'

कल्याणी ने शीघ्र ही पुराने फटे हुए कम्बल को रज़ाई पर डाल कर पानी का गिलास ला दिया। राजनारायण ज़रा उठ कर एक बारगी ही सारा गिलास सटक गए। फिर लेट कर कहा 'और पानी ले आ।' कल्याणी ने हाथ लगा कर कहा नाड़ी देखी तो पता लगा कि तेज ज्वर हो रहा है। कल्याणी फिर पानी न लाई। वह चारपाई के पाईंताने बैठ कर पण्डित जी के चरण दबाने लगी। कुछ देर के बाद पण्डित जी को निद्रा आई समझ कल्याणी वहां से उठ कर जाने लगी। जाते समय एक बार उसने नाड़ी और देखनी चाही। कल्याणी ने अभी हाथ को पकड़ा ही था कि राजनारायण चौंक पड़े। बड़बड़ाते हुए बोलेः—

"पकड़ लिया। पकड़ लो खूनी को। मैंने खून ज़रूर किया है। पर तुम साबित शायद न कर सको। लाश पर कोई शस्त्र का चिन्ह तुम्हें न मिला होगा। पर मैंने खून अवश्य किया है! क्या कहते हो! कैसे किया है? हाः हाः मेद बता दूं!

नहीं बताता। तुम आप पता क्यों नहीं लगा लेते ? क्या कहते हो, हमने पता लगा लिया है ? ठीक है तभी पकड़ने आये हो। पर मैंने तो किसी से भी अब तक यह भेद नहीं कहा था, तुम्हें कैसे पता लगा ? क्या कहते हो ज़हर दिया था ! हां, मैंने पान में ज़रूर ज़हर दिया था। पर तुम कैसे जान गये। तंबोली को पता नहीं, किसी मित्र को पता नहीं स्त्री को पता नहीं। अरे ! मैंने तो किसी का भी पता नहीं दिया तुम ज़हर देने की बात कैसे जान गये। क्या कहते हो, महात्मा जी को पता लग गया था। हाँ; यह बात तो हो सकती है। क्योंकि पान लेते समय उन्हों ने मुझे ऐसे ध्यान से देखा था जैसे वे सब कुछ जान गये हों पर फिर भी पान लेकर खागये थे। क्या पूछते हो महात्मा ने तब कुछ कहा भी था ? हाँ कहा था। कहने लगे, ब्राह्मण ! ब्राह्मण की हत्या करने आया है ! इस से क्या लाभ पहुंचेगा। मैं अभी मरूँगा नहीं। तू जल्दी ही ले आया है। अच्छा तुझे निराश नहीं करता, ला; खालेता हूँ। देख, किसी को कहना मत, मैं भी नहीं कहा करता। जा, ईश्वर तेरे कुटुम्ब का कल्याण करे। ओह ! पानी दे पानी ! कल्याणी दौड़ पानी लाई राजनारायण ने पानी पिया। कल्याणी समझ गई कि किसी महात्मा को पानमें ज़हर दे कर आये हैं। बेचारी घबराकर मनही मन महादेव जी से पति के कल्याण की कामना करने लगी। राजनारायण पानी पी कर फिर अचेत हो गये।

कल्याणी सारी रात पति के पास बैठी रही। बेचारी सोचती थी कि न जाने क्या होने वाला है। कौन से खोटे कर्म ऐसे कर चुकी हूं जिनसे कभी सुख भोगना नसीब न हुआ। आठ बरस का बालक किशोर बिना कुछ खाये ज़मीन पर ही सो गया था। कल्याणी को उसका ध्यान तक न आया बिना कुछ खाये पीये कल्याणी को वहां बैठे २ अगला दिन निकल आया। पर राजनारायण बे सुध पड़े थे। केवल पानी पानी कभी २ कह बैठते थे। उस रात में पानी के दस गिलास वे पी गये होंगे।

किशोर सवेरे उठकर माता से खाने को मांगने लगा। पिछले दिन के पड़े हुए ठाकुर जी के प्रसाद में से कल्याणी ने कुछ ले लेने को कहा। किशोर प्रसाद में से तेल की मठरी लेकर खाता २ खेलने चला गया।

अगले दिन कल्याणी वैद्य जी को बुला लाई। वैद्य जी ने राजनारायण की नाड़ी देखी।

वह सन्निपात कह कर दवा देने ही लगे थे कि राजनारायण ने फिर पानी मांगा। कल्याणी पानी देने लगी तो वैद्य जी ने ठंडा पानी देने से बन्द किया। राजनारायण ने अकस्मात् उठकर कल्याणी के हाथ से पानी का गिलास छीन लिया पूरा गिलास चढ़ाकर राजनारायण कुछ स्वस्थ होकर चारपाई पर बैठ गया। वैद्य जी को नमस्कार करके बोला,—

"महाराज! मैं बीमार नहीं हूं। दवाई बीमार को दी जाती है। मेरी बीमारी का कोई इलाज नहीं है। मैंने ब्रह्महत्या

की है ब्राह्मण को, महात्मा को, ब्रह्मऋषि को ज़हर देकर मारा है। इस पाप का प्रायश्चित मृत्यु है। आप दवाई किसे देने आये हैं ?''

वैद्य जी अवाक् रह गये, तुमने किस ब्रह्मऋषि को मार डाला ? आज कल ऋषि महात्मा कहाँ से आवे। पागल हो गये हो। सन्निपात का प्रलाप है अभी दवा देते हैं ठीक हो जावेंगे।'

वैद्य जी चट से दवा निकाल घिस कर देने लगे। रोगी ने दवा फेंक कर कहा—

'वैद्य जी ! मैं प्रलाप नहीं कर रहा सत्य कहता हूं उसी स्वामी दयानन्द सरस्वती को कल शाम पान में ज़हर देकर आया था वह ब्राह्मण हैं, महात्मा हैं, ब्रह्मर्षि हैं। उनकी मैं हत्या कर आया हूं। हाय ! ब्राह्मण ने ब्राह्मण को मारा है इसका कोई प्रायश्चित नहीं ! कोई दवा नहीं।

वैद्य जी मुस्करा कर बोले। 'अरे ! उस खिष्टान को तो मार डालने में पुण्य है यह तो वेद शास्त्र की निन्दा करता है, सबको ईसाई बनाता फिरता है। मन्दिर मूर्त्ति तुड़वा रहा है। क्या वह मर गया ? सच ! तब तो खुश होना चाहिये।'

राजनारायण ने क्रोध से उछल कर वैद्य जी को एक थपत जमादी और बोला, 'धूर्त ! तेरे जैसे नास्तिकों ने तो मुझ से यह पाप करवा डाला है। मैं भी उस महात्मा को नास्तिक और वेद शास्त्र का विरोधी समझ अपनी जीविका जाने के भय से मारने गया था। पर उसके पास जितने क्षण

भी रहा देखते ही वे भाव उड़ने लगे उसकी विशाल, निर्मल, सतेज आंखें, विकसित मुखारविन्द, महान् शरीर देखकर मुझे उधर कुछ २ आकर्षण होने लगा। मैंने झट उनके हाथ में पान का बीड़ा खाने को देदिया कि कहीं मैं भी उनकी ओर झुककर तुमसे ब्राह्मणों का द्वेषी न बन जाऊं। साथ ही मैंने उसके साथ का दूसरा बीड़ा झट अपने मुंह में रख लिया ता कि महात्मा को कहीं सन्देह न होजाय कि यह अपरिचित व्यक्ति पान क्यों ले आया है। परन्तु पान लेते ही महात्मा सब समझ गये। वह हंसते २ पान चबा गये। हाय! मैंने पान उनके हाथ से क्यों न छीन लिया। मैं पान खाते ही वहां से घर को भागा। महात्मा! क्षमा करना। बस क्षमा ही चाह.................।'

इतना कहते २ ही राजनारायण को एक भयंकर खून की वमन हुई। अभी पांच मिनट ही गुज़रे थे कि दूसरी खून की वमन हुई। वैद्य जी और कल्याणी संभालते ही रहे कि राजनारायण के तीसरी वमन के साथ ही प्राण निकल गये।

कल्याणी सिर पीटकर रह गई। वैद्य जी ने हज़ार २ गालियां खिष्टान दयानन्द को दीं। किशोर को पता लगने पर वैद्य जी के अनुकरण में बालक भी खिष्टान दयानन्द को गालियां देते २ रोने लगा। घर में शोक छा गया।

—:o:—

(य परिच्छेद)

आजकल काशी में जिधर देखो एक ही बात सुनाई पड़ती है। पण्डितों की मण्डलियों में, विद्यार्थियों की पाठशाला में, पण्डों के अखाड़ों में, पुजारियों के मन्दिरों में, गुण्डों के अड्डों में, ऊंची अट्टारियों में, दरिद्रों के घरोंमें सर्वत्र दयानन्द का नाम गूंज रहा है। सब लोग रातदिन देवता के आगे अपने हृदय मे यही प्रार्थना करते हैं कि हे महादेव ! यह श्मशान शीघ्र नष्ट हो। इसका मानमर्दन करने वाला कोई तो निकले। कुछ दिन इसका इसी प्रकार अखण्ड प्रचार जारी रहा तो इस नगरी से त्रिशूलधारी महादेव का राज्य नष्ट हो जायगा। मन्दिर मूर्तियों से रहित हो जायेंगे। ब्राह्मणों की जीविका छुट जायेगी परम्परा प्राप्त धर्म की दुर्गति हो जावेगी वैष्णव लोग विष्णु से विनम्र भाव से घण्टों प्रार्थना करते हैं। मधुसूदन ! इस दयानन्द असुर का दलन कर। नहीं तो कृष्ण भक्ति संसार से उड़ जायेगी। इसी प्रकार सब लोग प्रार्थना करते, मण्डलियां बनाते कुचक्र रचते हैं। यहां तक भी निश्चय किया गया कि जो मनुष्य उस नास्तिक का शिर उतार लायेगा उसे कई सहस्र मुद्रा पुरस्कार दिया जायेगा। इतना सब कुछ होते हुये भी जो कोई उस नास्तिक के सामने जाता था उसी का होकर रह आता था। बड़े २ चक्र चलाने को वहां पहुंचे परन्तु दयानन्द की आंख से आंख मिलाते ही पूंछ हिलाते हुए कुत्ते की तरह वहीं दुबक कर बैठ गये। इसी

प्रकार नित्य यत्न करने पर भी कुछ फल न निकला। प्रत्युत धीरे २ उनमें से ही अनेक उसी के शिष्य होने लगे। अब वे ही उन्हें नास्तिक के स्थान में महात्मा, देवता, ऋषि कहते दिखाई दिये।

पाठक! धन का लालच बुरा होता है।

पण्डित राजनारायण एक दरिद्र ब्राह्मण था। कुछ थोड़ी संस्कृत भी पढ़ा था। घर की दशा बहुत ही हीन थी एक छोटी सी सालिग्राम की मूर्त्ति घर में रखकर घर को ठाकुर द्वारा समझ कर वहीं सन्तोष से बैठा रहता था। प्रातःकाल और सायंकाल देवता को स्नान करा, धूप, दीप, नैवेद्य से पूजा करके उसके सामने हाथ जोड़ बैठकर कुछ श्लोक पढ़ा करता था पास में उसकी स्त्री कल्याणी और शिशु किशोरी भी बैठ कर बिना अर्थ समझे ही उन श्लोकों को सुना करते थे। इसी प्रकार दोनों समय होता था। कुछ दिन से घंटे की टन टन और शंख की पूं पूं सुनकर दो चार पड़ोस की बड़ी बूढ़ी स्त्रियें भी पूजा करने आने लगी थीं। उस स्थान पर इलायचीदाना, बताशे, तेल की मठरी गेंदे के फूल वा कभी २ कोई पैसा भी चढ़ावे में चढ़ता था। कभी २ पंडित जी पूजा पाठ के लिये भी यजमानों में जाते थे। कभी कोई यजमान आटा, दाल घी देजाते थे। इसी प्रकार बड़ी दीनता से पंडित जी के दिन गुज़र रहे थे। बड़ी बूढ़ी स्त्रियों के घर में आने से उन्हें कुछ आशा अवश्य हुई थी कि अब हमारा भाग्य चमकने वाला है। बात भी सच थी दो सप्ताह से कुछ अधिक चढ़ावा

बढ़ने लगा था। एक दिन तो पूरे आठ पैसे होगये थे। एक ब्राह्मण के लिये दो आने एक दिन में कमा लेना क्या थोड़ी बात थी ? जिस दिन दो आने आये थे उसी दिन भावी समृद्धि की आशा से पण्डित जी बीस रुपये किसी से उधार लेकर एक गौ मोल ले आये थे। इसी प्रकार पण्डित जी के दिन बीत रहे थे कि अचानक दयानन्द सरस्वती का काशी में आगमन हुआ। स्वामी जी के उपदेश में नित्य भीड़ बढ़ती जाती थी लोग मन्दिरों से धीरे २ मन मोड़ते जाते थे और उन के स्थान में एक ईश्वर की पूजा करने लगे थे। पण्डित राजनारायण की गली में भी स्वामी के उपदेशों की चर्चा चली स्त्री पुरुष स्वामी जी की युक्तियों का जब घरों में विचार करते थे तो उनकी युक्तियां उन्हें सत्य प्रतीत होती थीं धीरे २ अन्य मन्दिरों के सामान राजनारायण के ठाकुर-द्वारे में भी चढ़ावा चढ़ना बहुत कम होगया कभी २ एक पैसा भी न चढ़ता था।

राजनारायण यद्यपि अच्छे चरित्र से शान्त मनुष्य थे तो भी नित्य की बढ़ती दरिद्रता और स्त्री बच्चों के शोकातुर मुख को देखकर वह इस दरिद्रता का सारा रोष स्वामी दयानन्द पर मढ़ने लगे। एक दिन राजनारायण को पता लगा कि पण्डितों की गुप्त सभा ने यह घोषणा निकाल रक्खी है कि जो दयानन्द को मार डालेगा उसे कई सहस्र मुद्रा मिलेंगी। बस "एकै साधै सब सधै" की नीति के अनुसार राजनारायण ने दयानन्द को मौत के घाट उतारने और इनाम

पाकर अपनी दरिद्रता दूर करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। उपाय सोचने में कुछ देर लगी अवश्य। पर अन्त में उपाय भी निश्चय कर लिया गया। अर्थात् "पान में विष" देना।

'स्वामी जी को पहिले भी पान में किसी ने ज़हर दिया था यह बात राजनारायण सुन चुका था। इसलिये स्वामी का संदेह दूर करने के लिये उसने तम्बोली से दो पान के बीड़े लगाकर एक ही काग़ज़ में लपेट लिये थे। कुछ दूर जाकर एक पान को खोलकर उसमें ज़हर मिला दिया। उसे सावधानता से लपेट कर फिर पहले पान के साथ रख एक ही काग़ज़ में दोनों को लपेट लिया। केवल ज़हर वाले पान को अपने अंगूठे के नीचे दबा रक्खा और दूसरे पान को उंगली की ओर से पकड़ कर स्वामी जी के डेरे पर पहुंचा। वह स्वामी जी की पीठ की ओर बैठ गया।

स्वामी दयानन्द वहां अनेक मनुष्यों से घिरे हुए धर्म चर्चा कर रहे थे। उनकी बातें सुनते २ राजनारायण को निश्चय होगया कि वह भी स्वामी जी का भक्त होने लगा है। इसने पानों वाले काग़ज़ को भूमि पर रख कर तुरन्त दोनों हाथों से अपने कान बन्द कर लिये। दरिद्रता दूर करने के लिये स्वामी को अवश्य मारना होगा ऐसा समझकर ही उसने यह काम किया था। कुछ काल के पीछे सूर्य अस्त होने के साथ ही स्वामी जी ने सब को सन्ध्या बन्दन करने के लिये अपने पास से बिदा कर दिया। सब के जाते ही ब्राह्मण ने झट पीछे से निकल स्वामी जी को पान का बीड़ा दिया।

स्वामी जी ने हंसते २ बीड़ा उठा कर मुंह में रख लिया और उसे वह शब्द भी कहे जो पाठक राजनारायण के मुंह से प्रलाप की अवस्था में सुन चुके हैं।

पान देकर राजनारायण ने सन्देह दूर करने के लिये दूसरा पान स्वामी जी के सामने ही स्वयं खाना चाहा। स्वामी जी ने राजनारायण को पान खाने से रोकते हुए कहा "ब्राह्मण ! तुम्हारा संध्या वन्दन का समय है। पान मत खाओ इसे तो अब फैंक ही दो। खाना ही हो तो संध्या के पीछे अन्य पान खा लेना"। यह कहकर पान को उसके हाथ से स्वामी जी छीन कर फैंकने को ज्योंहीं बढ़े त्यों ही राजनारायण ने यह समझ कर कि मैं पकड़ा गया, स्वामी मुझ पर संदेह करके पकड़ने उठे हैं, एक दम पान को मुंह में डाल चबा कर निगल लिया और सिर पर पैर रखकर भागा।

पाठक ! कानों को बन्द करने के समय जैसे पानों वाला कागज़ राजनारायण ने पृथ्वी पर रखा था, स्वामी जी को देने के समय ठीक उलटा कागज़ पकड़ा गया। जो स्वामी को नहीं देना था वह स्वामी को दिया गया। जो पान स्वामी को देना था वह आप खा गया। क्या करें ! मनुष्य २ है, भगवान २ है। तभी कहा है—

"हमरे मन कछु और है विधिना के कछु और"

इस उलट फेर से राजनारायण की जो दशा हुई पाठक प्रथम परिच्छेद में पढ़ ही चुके हैं।

(३ य परिच्छेद)

पण्डित जी के मरने के पीछे कल्याणी की अति हीन दशा होगई थी जीविका का कोई साधन न था। किशोर अभी बच्चा ही था। साथ में एक गौ को भी पालना पड़ता था गौ अभी बछिया कहाने के योग्य थी अभी वह पहली बार भी दूध न दे पाई थी। कल्याणी को आशा थी कि इस बार वह ज़रूर दूध देने योग्य हो जावेगी। कल्याणी यथा शक्ति उस की सेवा करती थी। खाने पीने के लिये ऋण लेना आवश्यक देख कल्याणी उधार लेने लगी छः महीने में लगभग ५०) उसके शिर चढ़ गये। उधार बढ़ता ही जाता था। उसे कल्याणी कैसे चुका सकेगी इस बात को कल्याणी जब सोचती थी तो सिवाय किशोर के कोई अवलम्ब न दीखता था। कभी२ वह किशोर की छोटी आयु देखकर निराश भी हो जाती थी। रुपया चुकाते न देख लोगों ने उधार देना बन्द कर दिया। रुपये वाले चुकाने का तक़ाज़ा करने लगे। एक दिन एक बनिये ने गली में खड़ा होकर कल्याणी को बहुत ऊंच नीच सुनाई कल्याणी ने बनिये के तीस रुपये, देने थे। कल्याणी ने हाथ जोड़कर २ महीने की और मोहलत मांगी। बनिया यह कह कर चला गया कि यदि २ महीने के अन्दर मेरे रुपये न चुकाये तो मकान और सब असबाब कुर्क करा लूंगा।

कल्याणी एक लज्जा शील अच्छे चरित्र की स्त्री थी। उसने निश्चय कर लिया था कि यदि दो मास तक कुछ बंदोबस्त

रुपये चुकाने का न हो सका तो मैं आत्महत्या कर लूंगी। जब पति ही न रहे तो स्त्री के भी रहने का धर्म नहीं।

कल्याणी इसी उधेड़ बुन में रहती थी। उसने रात के समय का भोजन उसी दिन से छोड़ दिया था जिस दिन बनिये ने उसके मकान को कुर्क करने की बात कही थी। अब एक मास होने को है कि कल्याणी के घर रात को चूल्हा नहीं चढ़ता। दोपहर की रखी हुई दो सूखी रोटियां नमक और पानी से खाकर किशोर रात का भोजन समाप्त करता है। परन्तु आज किशोर सायंकाल घर नही पहुंचा। कल्याणी बड़ी चिन्तित बैठी थी कि अचानक किशोर ने दरवाज़ा खटखटाया और अन्दर आते ही बोला, "मां, आज पूरा बदला लेलिया है। पिता का बदला पुत्र को लेना ही चाहिये न। क्यों मां! मैंने अच्छा किया न! मैंने आज उस मोटे साधु के गले में जूतियों का हार भरी सभा में डाल दिया।

माँ ने उठकर किशोर का मुंह हाथ से ढांप कर कहा, बेटा! क्या बकता है। चुप रह, ऐसी बात मुंह से नहीं निकाला करते, किसी साधु के क्या डाला, ज़रा धीरे २ कह।

किशोर ने मुंह पर से मां का हाथ हटाते हुए कहा 'माँ,! वही खिष्टान दयानन्द साधु आजकल काशी में फिर आया हुआ है। मैं भी वैद्य जी के साथ सभा में जा पहुंचा था। वहां एक स्त्री खिष्टान के गले में डालने को जूतियों की माला बना लाई थी। मैंने उसी माला को ले साधु के पास जाकर उसके गलेमें डाल दिया। पिता का बदला लेतेहीमैं भाग पड़ा।

कल्याणी दयानन्द का नाम सुनते ही सिर पीट कर रह गई। शिवजी को स्मरण करते हुए बोली, बेटा तैंने बहुत बुरा किया। तेरे पिता ने उसको ज़हर दिया था, वह स्वयं ही चलता बना और साधु का कुछ नहीं बिगड़ा। अब तूने ऐसा काम किया है कि न जाने तुझे साधु ने क्या शाप दे दिया हो। हे भगवान! मुझ अभागिनी पर क्यों विपत्ति गिरा रहे हो ऐसा कह रोने २ उसने किशोर को गोद में ले चादर से ढक लिया। फिर डरते २ पूछा बेटा! साधु ने तुझे मारा था?

किशोर ने गोदी से निकल कर कहा, 'नहीं मां, लोग मारने लगे थे। पर जब साधु ने देखा तो उसने लोगों को बन्द करके कहा, कि देखो इस बच्चे को कोई कुछ मत कहो, इसे आने दो। यह बड़े प्रेम से बनाये इस जूतियों के हार को हमारे गले में डालने को आरहा है। 'ऐसा कहते २ साधु ने आगे बढ़ कर शिर झुका कर वह हार अपने गले में डाल लियाऔर मुझे कुछ न कहा। बस, मैं वहाँ से सरपट भागता आरहा हूं।'

माँ ने पुत्र की मंगल कामना करके रोटी खिलाकर किशोर को सुला दिया। कल्याणी उदास होकर कुछ सोचती रही वह दयानन्द के नाम से घबरा गई थी।

———:o:———

(४ थं परिच्छेद)

उपरोक्त घटना को बीते ५ दिन हो गये।

आधी रात का समय है अभी बारह बज कर चुके ही हैं। रात चांदनी है पर बादलों में कभी २ चांद छिप जाने से अँधेरा भी हो जाता है। इस समय काशी निस्तब्ध है। गंगा के बहने का शब्द केवल सुनाई दे रहा है। एक साधु समाधि लगाये गंगा के किनारे बैठा है। उसके शान्त मुख मण्डल से अद्भुत शान्ति बरस रही है। पास ही एक मनुष्य पड़ा सो रहा है। साधु ध्यान में मग्न है।

इसी समय "गंगा मईया ! तेरी शरण लेती हूं। तूही दुःख दूर कर" ऐसा बोलते हुए किसी नारी ने गंगा में छलांग लगादी साधु ने नेत्र खोल पास पड़े हुए मनुष्य को पुकारा 'बलदेव ! देखो कोई अबला पानी में कूदी है, जल्द निकालो। मैं भी उसे............।'

अभी वाक्य पूरा भी न होने पाया था कि दूसरी छलाँग की आवाज़ सुनाई दी और देखते न देखते बलदेव एक स्त्री को जल से निकाल साधु के सामने ले आया।

साधु 'देवी तुम कौन हो? आधीरात पानी में क्यों कूदती हो? क्या जीवन छोड़ने से दुःख छुट जायेंगे। कर्म फल तो अवश्य भोगना पड़ेगा'।

नारी !—महाराज ! आपने मुझे बचाकर अच्छा नहीं किया। मैं दुःखों से एक बार ही छूटने चली थी आपने क्यों

बाधा दी। मुझे अब जीने से कष्ट ही कष्ट है। मैं जी कर क्या करूंगी।

साधु—'देवी! धीरज धरो! कहो तो तुम्हें क्या कष्ट है'

नारी—महाराज! मैं विधवा हूं दरिद्रता के मारे तंग आगई हूं। कर्ज़ा बहुत सिर चढ़ गया है। उतारने का कोई उपाय नहीं। एक मात्र पुत्र है वह भी छोटा है उसे सोता छोड़कर आज गंगा की शरण आई थी सो आपने मरने भी न दिया'।

साधु—देवी! तुम्हारे घर में कुछ और भी है?

नारी—महाराज! एक बछिया और है। पर वह आज तक सुई नहीं, अब सूने की आशा थी पर उससे क्या होगा?

साधु ने नेत्र बन्द कर लिये। दो क्षण बाद नेत्र खोल कर कहा —

"देवी! तुमने बहुत भूल की जो यहां चली आई। शीघ्र घर जाओ। तुम्हारी गौ अभी घण्टे भर में सूने वाली है। तुम्हारे सभी दुख गौ की सेवा से दूर हो जायेंगे। शीघ्र चली जाओ।"

कल्याणी — सच महाराज! क्या एक घण्टे तक मेरी गौ सुएगी? तब तो लौट जाना ही धर्म है। नहीं तो गोहत्या का पाप भी सिर चढेगा।'

साधु ने बलदेव से स्त्री को घर तक पहुंचा आने को कहा कल्याणी बलदेव के साथ चल पड़ी। परन्तु दो पग चल कर फिर लौट पड़ी। साधु से कहने लगी—

महाराज ! आपका शुभनाम क्या है ? कहां निवास है ?

साधु—भाई मुझे दयानन्द कहते हैं । मैं रामबाग़ में ठहरा हुआ हूं ।

कल्याणी एक दम घबरा कर खड़ी होगई । डरते २ बोली- "क्या कहा दयानन्द ! हाय, तब तो अनर्थ होगया ।"

माई ! क्या अनर्थ हो गया ।

कल्याणी—महाराज ! यदि सचमुच आप ही दयानन्द हो तो मुझे अभी भस्म करो । मैंने आप को कष्ट देने के कारण ही ये सब दुःख उठाये हैं । मेरे पति ने आप को ज़हर दिया था, आप के शाप से वही मर गया । मेरे बच्चे ने आप के गले में जूतों का हार डाला था वह भी तभी से सूखता जा रहा है ! तब महाराज ! मुझे भी शाप देकर अभी भस्म करो । मैं जीकर क्या करूंगी ।

दयानन्द—माता ! धैर्य्य धरो । क्या कह रही हो ? दयानन्द ने तो आज तक किसी को भी शाप नहीं दिया । वह शाप देगा भी नहीं । वह तो लोगों का सदा भला ही करता है और करता रहेगा । उसको चाहे कोई कितना ही अनिष्ट कर डाले वह तो उसे याद भी नहीं रखता । तुम्हारे पति ने कब ज़हर दिया था । (कुछ ध्यान करके) अहो ! वह बात कहती हो । वह तो होनहार थी । होनहार जो होती हो उसमें दयानन्द कुछ नहीं कर सकता ।

कल्याणी—क्या कहते हो, महाराज ! होनहार थी । तो क्या आपने मेरे स्वामी को शाप नहीं दिया ।

दयानन्द—नहीं देवी। विस्मय न करो। तुम्हारे पति ने ज़हर वाला पान भूल से स्वयं खालिया था और मुझे दूसरा पान दिया था। मैंने उसे पान खाने से रोका भी। परन्तु ऐसा ही उसका कर्म फल था। मैं उसे कैसे बचा सकता था ?

कल्याणी— अहो! तब तो बड़ा भ्रम उठ गया। तभी पति देव आपकी स्तुति करते २ परलोक सिधारे थे। तो क्या मेरे किशोर को भी आपने शाप नहीं दिया ? वह तो दिन२ सूखता जाता है।

दयानन्द—(कुछ देर ध्यान करके) देवी ! दोनों समय सूखी रोटी खाने और वह भी भर पेट न खाने से ही उसका यह हाल हुआ है। जाओ गौ का दूध पिलाने से वह भी पुष्ट हो जायेगा।

कल्याणी कुछ देर आश्चर्य मुग्ध होकर खड़ी रही। तब आगे बढ़कर स्वामी के चरण छूने लगी।

दयानन्द ज़रा हटते हुए सतेज स्वर से बोले—

"जाओ जाओ, जल्दी चली जाओ। तुम्हारा अब विलम्ब करना ठीक नहीं। दयानन्द के चरण छूने का रमणी को अधिकार नहीं। हाँ, दयानन्द का मस्तक माता के चरणों को छू सकता है। विधाता का ऐसा ही विधान है। देवी ! मुझे स्पर्श मत करना।"

कल्याणी ठिठक कर वहीं खड़ी रहगई। डरते २ बोली "महाराज ! आप इतने ऊंचे हैं ! " ऐसे तपस्वी, महात्मा परोपकारी मनुष्य तो इस कलियुग में होते नहीं। आप कहां

इस लोक में आगये। मैं चरण स्पर्श तो नहीं करती मुझे कोई अन्य सेवा अवश्य बतायें मैं कृतार्थ हो जाऊंगी।

दयानन्द—माता! साधु को सेवा की आवश्यकता नहीं होती। तोभी तुम्हें श्रद्धा होतो कुछ दूध मेरे स्थान पर भिजवा दिया करना परन्तु यदि गौ की बच्ची और किशोर को भूखा रखा तो मैं दूध न पीऊंगा।

कल्याणी—महाराज! मैं कृतार्थ हुई! क्या गौ बच्चीदेगी?

दयानन्द—जाओ, शीघ् जाओ। बलदेव। जाओ इन्हें शीघ्र छोड़ आओ।

बलदेव—गुरुदेव! आप यहां अकेले रहेंगे?

दयानन्द—अकेले! बलदेव! दयानन्द सदा अकेला ही रहा है कोई भय नहीं है। शीघ्र देवी को घर पहुंचा आओ। भय यही है कि कहीं जाने से पहिले गौ ब्यू न गई हो।

बलदेव कल्याणी को लेकर चला गया।

कहना नहीं होगा कि घर पर पहुंचते ही देखा कि गौ एक बछिया कुछ देर पहिले जन के चुकी थी। कल्याणी उसकी देख भाल में लग गई। बलदेव के लौट जाने का उस को पता भी न लगा।

(पाँचवां परिच्छेद)

कल्याणी की सेवा से प्रसन्न होकर गौ दोनो समय मिला कर आठ सेर दूध देती है। कल्याणी नियम से छः सेर दूध नित्य दयानन्द जी के स्थान पर भेज देती है। स्वामी जी के स्थान पर कल्याणी को जाने की आवश्यकता नहीं। बलदेव नित्य प्रातः सायं आकर दूध ले जाता है।

किशोर नित्य ही डेढ़ दो सेर दूध पी कर पुष्ट हो गया। कल्याणी प्रसन्नता में बनिये की बात भूल गई।

ठीक दूसरे महीने की समाप्ति पर सायंकाल बनिया रुपया माँगने आगया। कल्याणी उसे देख इधर उधर झाँकने लगी। बनिये ने गौ को बच्चा दिया देख उसी को लेने की मन में ठान, कहा—

"रुपया देती है या नहीं?"

कल्याणी चुप रही।

बनिया—तुम्हारी गौ कितना दूध देती है?

कल्याणी—आठ सेर!

बनिया—अच्छा, अभी मैं इसे ही लेजाता हूं। बाक़ी हिसाब फिर समझ लूंगा।

बनिया गौ को खोलने लगा. कल्याणी ने गौ को न लेजाने की बहुत प्रार्थना की, गिड़गिड़ाई, रोई, चिल्लाई। पर बनिये ने एक न सुनी, गौ खोल कर चलने लगा।

उसी समय बलदेव दूध लेने आगया। गौ को बल पूर्वक घर से ले जाते देख बलदेव ने बनिये को गले से पकड़ लिया बनिया डर के मारे गौ को छोड़ हट कर एक ओर खड़ा हो गया।

बलदेव ने बनिये को घर से बाहर निकाल कड़कड़ाते हुये पूछा, "तेरे कितने रुपये इसने लिये थे"?

बनिये को स्वप्न मैं भी आशा न थी कि कोई विधवा का भी सहायक आ निकले। वह बलदेव के वज्र समान हाथ से पकड़ा जाने के कारण देखते हुये गले को अभी मल ही रहा था कि बनिये से बलदेव ने रुपये के विषय में पूछा। बनियेको इस प्रश्न से कुछ शान्ति मिली सही। परन्तु बलदेव को सामने खड़ा देख वह डर के मारे काँपते २ बोला "तीस रुपये"। उसने डर से ब्याज भी न बताया केवल तीस ही कह कर और परे को हट गया।

बलदेव--अच्छा सुन लिया ! ज़रा परे हट कर खड़ा रह। अभी २ रुपये तुझे मिल जायेंगे। पहले हम गुरु जी के लिये दूध ले लें"।

बनिया यह न जानता था कि बलदेव जैसा कड़ियल जवान भी अपने गुरु से डरता है बनिये ने बलदेव के गुरु को बलदेव से भी बड़ा पहलवान समझ कर काँपते २ कहा "कुछ जल्दी नहीं हुजूर ! आप का दास रात भर ऐसे ही खड़े रहने को तय्यार है"।

बलदेव कुछ मुस्कराया ! कल्याणी ने दूध दोह दिया। बलदेव ने तीन आने सेर के हिसाब से लगभग एक महीने भर के दूध के दाम ३३) रुपये कल्याणी को देदिये कल्याणी ने रुपये लौटाते हुए आश्चर्य से कहा—"यह रुपये कैसे ! मैं कदापि न लूंगी"।

बलदेव—यह तीन आने सेर के हिसाब से दूध के दाम हैं। तुम लेती क्यों नहीं" !

कल्याणी—ब्राह्मण को दूध बेचने से पाप लगता है।

"बलदेव— मेरे गुरुदेव तुम से अधिक पाप पुण्यको समझते हैं। यह उन के भेजे हुए रुपये तुम्हें अवश्य ही स्वीकार करने पड़ेंगे '।

यह कह कर बलदेव ने कल्याणी को रुपये फिर दे दिये।

कल्याणी ने देवता का प्रसाद समझ रुपये ले लिये। बलदेव चला गया। बनिये की आकाङ्क्षा पूरी हुई।

[तीसरा परिच्छेद]

आज काशी में स्थान २ पर एक ही चर्चा हो रही थी। कुछ लोग चौराहे पर खड़े कल की घटना के विषय में बातें कर रहे थे। कल सायंकाल भरी सभा में उसी लड़के किशोर ने दयानन्द सरस्वती के गले में फूलों की माला डाली थी। लोग इसी घटना को लेकर दयानन्द सरस्वती की प्रशंसा कर रहे थे।

एक ने कहा—"वह जादूगर प्रतीत होता है! जो कोई उस के यहाँ जाता है वैसा ही हो जाता है। वह कुछ ऐसा बोलता है, कुछ ऐसा देखता है कि बिना उस के वश में हुए रहा ही नहीं जाता। कल उसी लड़के ने जब फूलों की माला गले में डालनी चाही तो उसने कहा, 'बेटा, हमें तो वही जूते की माला लादो, मेरे लिये फूलों की माला नहीं है'। लड़का रोता २ उनके पैरों को लिपट गया। सारी सभा इस दृश्य को देख कर रो पड़ी।

लोगों में से एक ने कहा—अजी वह मन्त्र शास्त्री है। मंत्र से सब को वश में कर लेता है।

दूसरा बोला—नहीं जी वह कोई सिद्ध है!

तीसरा—अजी सरस्वती उसकी जीभ पर है! सब वेद शास्त्र उसे कण्ठ हैं।

चौथा—वह पूर्ण ब्रह्मचारी है!

पांचवां -वह ऋषि है, कोई ब्रह्मर्षि है !

छटा—वह इस लोक का नहीं, कोई देवता है।

सातवाँ—वह हिन्दू जाति का रक्षक है।

आठवाँ—वह सब जगत का उपकार करने वाला पूरा महात्मा है।

नवाँ-अजी ! किस की बात करते हो भाई ! कौन सा गुण है जो उस में न हो। वह ब्रह्मचारी है, सन्यासी है, तपस्वी है, योगी है, ऋषि है, ब्रह्मवेत्ता है, परोपकारी है। कोई ब्रह्मा जी के समय का वैदिक ऋषि है। हमसे पूछो तो हम सब का कल्याण उसी की बात मानने से होगा !

इसी समय इस भीड़ को चीरते हुए एक रमणी और एक बालक आगे बढ़े।

किशोर--वह तुम्हारा कोई भी हो, मेरा तो वह "खिष्टान दयानन्द" ही है।

कल्याणी--वह स्त्री जाति का सच्चा उपकार करने वाला और गौ-रक्षक है। उस से बढ़ कर इस काशी में कोई देवता नहीं है बोलो गौ-रक्षक दयानन्द की जय।

सब--गौ-रक्षक दयानन्द की जय ?

किशोर--गौ-रक्षक खिष्टान दयानन्द की जय ?

श्रद्धानन्द

अभी रात के साढ़े दस बजे हैं ! दिल्ली के नये बाज़ार के दो तल्ले मकान पर स्वामी श्रद्धानन्द जी एक बड़े पलंग पर आसन जमाये सोने से पूर्व परमात्मा से प्रार्थना कर रहे हैं। उसी समय दरवाज़े पर खटका होता है। नौकर ने द्वार खोल दिया है। एक अधेड़ आयु के मुसलमान अन्दर प्रवेश करते हैं ? उन के साथ ही एक व्यक्ति बुर्क़ा ओढ़े प्रवेश करती हैं।

आगन्तुक का शरीर हृष्टपुष्ट, लंबाक़द, चुभती दृष्टि, और गोरा रंग था। बहुमूल्य कपड़ों से शरीर ढका हुआ था। देखने से कोई बड़ा रईस प्रतीत होता था।

नौकर ने दोनों को बैठने के लिये कुरसी दी ! बुर्क़ा ओढ़ी हुई व्यक्ति पहले तो कुरसी पर बैठी फिर नवागन्तुक के इशारे से कुर्सी से उठ गई और कमरे की वस्तुओं को ध्यान से देखने लगी। पर दूसरे महानुभाव कुरसी पर बैठगये।

श्री स्वामी जी उसी प्रकार ध्यानावस्थित बैठे हैं, पास की कुरसी पर सामने ही आगन्तुक महाशय बैठे स्वामी जी का चुप चाप निरीक्षण कर रहे हैं। स्वामी जी का नौकर धर्मसिंह

खड़ा दोनों मुसलमान आगन्तुकों पर कड़ा निरीक्षण कर रहा है। यद्यपि पंजाब के सुप्रसिद्ध मार्शल ला के दिन थे। पंजाब में कई जगह बलवे, हत्यायें मारकाट और ऊधम मच चुके थे। पर दिल्ली में अपेक्षाकृत शान्ति थी। हिन्दू मुसलमान स्वामी श्रद्धानन्द जी की आज्ञा में चलकर दिल्ली में रामराज्य मना-रहे थे। गवर्नमेंट को कोई इतना न मानता था जितना स्वामी श्रद्धानन्द को। अभिप्राय यह कि हिन्दू मुसलमान दूध और खाँड की तरह एक हो रहे थे। सैंकड़ों मुसलमान स्वामी जी से नित्य मिलने आते थे। कभी २ रात के दो २ बजे स्वामी जी को जगाकर मिलते थे। पर धर्मसिंह किसी भी नये मुसल-मान पर अपनी कड़ी दृष्टि नहीं छोड़ता था। वह बराबर छाया की तरह तब तक नवागन्तुक के पीछे लगा रहता था। जब तक स्वामी जी दूसरे कमरे में न भेज देते थे। तब भी वह किसी न किसी बहाने स्वामी जी के कमरे में आकर एक बार नवागन्तुकों को कड़ी दृष्टि से देख ही जाता था।

अकस्मात् स्वामी जी ने ओ३म् कहकर आँखें खोलीं! धर्मसिंह ने स्वामी जी से आगे बढ़कर निवेदन किया--

"महराज! दो महाशय आप से मिलने आये हैं!" स्वामी जी को आंखें खोले देख कर नवागन्तुकों ने तनिक झुक-कर प्रणाम किया। स्वामी जी ने आशीर्वाद देकर आने का कारण और परिचय पूछा! इसी समय बुर्क़ा ओढ़ी हुई व्यक्ति बिछे हुए फ़र्श पर नीचे बैठ गई।

आगन्तुक–स्वामी जी महाराज ! मैं काबुल का रहने वाला हूं। मेरा नाम हबीब उल्लाखाँ है। मैं पहले क़ाबुल में फ़ौज का अफ़सर था। किसी निजू कारण से अमीर काबुल ने मुझे नौकरी से मौक़ूफ़ कर दिया , और यह भी हुक्म दिया कि सारी जायदाद मेरी ज़ब्त करली जाये , और मुझे सपरिवार नज़र बन्द कर लिया जाय। खुश-किस्मती से मुझे इस हुक्म का एक रात पहले ही किसी भेदिये से पता लग गया। मैं अमीर के स्वभाव को जानता था, रातोंरात जो नक़द रुपया पैसा था लेकर और अपनी बीवी बच्चों के साथ अपना भी भेष बदल कर किसी प्रकार से वहाँ से भाग निकला। अब कुछ दिनों से बाल बच्चों समेत इसी दिल्ली में रहता हूं।

स्वामी जी–(धर्मसिंह को वहाँ से जाने का संकेत करते हुए) यह आप के साथ कौन है ?

आगन्तुक–यह मेरी बीवी है !

स्वामी जी–इस समय कैसे आना हुआ ?

आग०–मैं आप की ख़िदमत में एक बहुत बड़ा मतलब लेकर हाज़िर हुआ हूं। अगर्चे आप भी उसी के लिये पहले से कोशिश कर रहे हैं लेकिन मेरे आप से मिल कर काम करने से मुझे बड़ा फ़ायदा पहुंच सकेगा।

स्वामी०–मैं,आप के अभिप्राय को नहीं समझा ! मैं कौन सा काम कर रहा हूँ !

आग०–(चारों ओर देख कर) मैं साफ़ २ कहने में ज़रा घब-
राता हूं मगर यहाँ कोई तीसरा आदमी नहीं! सुनिये!
आप अङ्गरेज़ी राज्य के उलटने के लिये जितनी भी
कोशिश कर रहे हैं यह बहुत ही मुबारिक है। लेकिन
अगर किसी तरह अमीर काबुल का राज्य यहाँ
क़ायम हो जाये तो जहाँ आप को अंग्रेज़ों के पंजे से
निज़ात हो जायेगी वहाँ मुझे फिर से क़ाबुल में बड़ा
ओहदा मिल जायेगा! और अमीर की नज़रों में मैं
हमेशा के लिये चढ़ जाऊंगा।

स्वामी०–मगर इस से हमारे देश को क्या लाभ पहुंचेगा!
देश तो कुछ और ही चाहता है।

आग०–आप के देश से अंग्रेज़ों का राज उठ जाना क्या थोड़ा
फ़ायदा है। फिर गौकशी भी तो अमीर के राज्य में
बन्द हो जायेगी।

स्वामी०–गौकुशी तो अब भी बन्द ही समझो (हिन्दूओं का
ख्याल मुसलमान कर ही रहे हैं। रहा, अङ्गरेज़ों का
राज्य ज़रूर हट जायेगा यह आप का ख्याल अव्वल
तो ठीक ही नहीं। अगर अङ्गरेज़ों का राज हटकर
मुसलमानों का हो भी जावे। तो भी कुछ सालों के बाद
फिर अङ्गरेज़ों का ही हो जायेगा।

आग०–यह कैसे हो सकता है?

स्वामी० जैसे पहले हो चुका है! पहले यहाँ मुसलमान ही
राज करते थे, उन से ही अङ्गरेज़ों ने लिया। ऐसे
ही फिर ले लेंगे।

आगन्तुक-स्वामी जी! अब बहुत अच्छा वक्त है। हिन्दू मुसलमान सब आपके कहने पर चल रहे हैं। हिन्दु और मुसलमान फ़ौज आप के हुक्म की इन्तज़ार कर रही है आज आप हुक्म देदें। रात भर में अंग्रेज़ों को मार काट कर सुबह दस बजे तक आप को दिल्ली के तख़्त का बादशाह बना दिया जायेगा।

स्वामी जी-(गम्भीर होकर) आप दिल्ली में क्या काम करते हैं? कहाँ रहते हैं? यहाँ पर आप की बीवी साथ क्यों आई है?

आगन्तुक-मैं आज कल कुछ काम नहीं करता, हाँ फ़ौज के सिपाहियों को मैंने उनके अफ़सरों से मिल कर काबू कर रखा है। अमीर का हिन्दुस्तान में राज होजाने से उन अफसरों को ऊंचे ऊंचे ओहदे दे दिये जायेंगे।

स्वामी जी-हिन्दुस्तान की राजधानी किसे बनाओगे?

आगन्तुक-दिल्ली को?

स्वामी जी-दिल्ली का तो आप मुझे राजा बना रहे हो, अमीर को भी यहाँ का बनाओगे?

आगन्तुक-अमीर कुल हिन्दुस्तान का शहन्शाह कहलायेगा लेकिन वह काबुल में ही रहेगा, आप हिन्दुस्तान का राज करेंगे।

स्वामी जी-तब तो फिर अमीर को इतनी तकलीफ़ उठाने की क्या ज़रूरत है यहाँ तो हिन्दु का ही राज हो गया।

आगन्तुक-आप चाहें तो किसी मुसलमान को दे सकेंगे।

स्वामी जी- मैं पूछता हूँ कि अमीर काबुल चाहे या मैं चाहूं !
आपको अपनी बात पूरी बनाके फिर आना चाहिये था।

आगन्तुक-(घबराकर) बात कैसी ? आज ही रात को सब
अंग्रेज़ों को मारने का मैं पूरा इन्तज़ाम कर आया हूं।
बस आप.........।

स्वामी जी-महाशय ! आप जानते नहीं कि हिन्दु मुसलमानों
ने अहिंसा का व्रत ले रक्खा है। आप ऐसा कर्म करके
सारे मुल्क को विश्वासघाती और बदनाम कराना
चाहते हो। महात्मा गाँधी नेः-

आगन्तुक-महात्मा गाँधी की बात दिल से कौन मानता है।
यह देखिये रुक्का इस पर सब बड़े २ फ़ौजी अफ़सरों
ने दस्तख़त कर रखे हैं। सिर्फ़ वे आपका हुक्म चाहते
हैं। बस आप अपना हुक्म और दस्तख़त करदें तो रात
को ही अंग्रेज़ बच्चा २ काट दिया जायेगा।

स्वामी जी-लाओ कागज़ ? (ध्यान से देखकर) इस कागज
को मैं पहले जाँच लूं। फिर महात्मा गाँधी से मशवरा
करलूं. फिर हुक्म लिखूंगा ?

आगन्तुक-इस में तो बहुत देरलग जायेगी। अभी२ हुक्म लिख
दें। फ़ौज तैय्यार है।

स्वामीजी ने-धर्म सिंहसे कलम दावात मंगाई। उस कागज को
जेब में रख लिया। नये कागज पर कुछ लिखकर दे दिया।
आगन्तुक ने बिना कुछ पढ़े एकदम कागज़ लपेट जेब में डाल
फ़ीपोश को इशारा किया। दोनों उठ खड़े हुये।

स्वामी जी—कहिये चल पड़े। आप की बीवी साहेबा भी क्या
इसी मतलब के लिये यहाँ आईं थीं? यह भी क्या
अंग्रेज़ों को मारेंगी।

आगन्तुक "जी हाँ" कहते २ बहुत जल्दी वहाँ से बिना ही स्वामी जी को सिर झुकाये बुर्क़ापोश सहित सीढ़ियों से नीचे उतर गया।

बुर्क़ापोश व्यक्ति जैसे आई वैसे ही बिना कुछ बोले चली गई। स्वामी जी ने चतुर "धर्मपाल स्नातक को (जो साथ के मकान में सदा तैयार रहते थे) उन दोनों के पीछे भेज दिया, और किवाड़ बन्द करा दिये!

दूसरा परिच्छेद

आज जामा मसजिद में हिन्दु मुसलमान सब को जाने की आज्ञा है। सारी दिल्ली उमड़ पड़ी है। क्या हिन्दु क्या मुसलमान सब ही आज जामा मस्जिद के आँगन में जमा हैं। नमाज़ हो चुकी थी। वाज़ भी मौलवी साहेब अभी समाप्त कर उठे ही थे कि इसी समय "स्वामी श्रद्धानन्द की जय" की आवाज़ें होने लगीं। देखते २ स्वामी जी की विशाल मूर्त्ति डण्डा हाथ में लिये आगे बढ़ती दिखाई दी। सब लोग ताज़ीम के लिये बिना पूर्व से कुछ सम्मति किये उठ खड़े हुए। स्वामी जी सब को बैठने का इशारा करके ज़मीन पर बैठने लगे। कि मौलाना

मुहम्मदअली ने स्वामी जी को हाथ मे पकड़कर आगे बढ़ाकर मस्जिद के प्लेट फ़ार्म पर चढ़ा दिया और हाथ जोड़ कर निवेदन किया कि आज हमें आप कुछ उपदेश दें।

स्वामी श्रद्धानन्द जी आसन जमा कर बैठगये। आँखें बन्द करके वेदमन्त्र पढ़ा और प्रार्थना तथा उपदेश आरम्भ हुआ।

स्वामी जी ज्यों २ बोलते जाते थे लोग उन शब्दों को प्यालों की तरह हृदय से पीते जाते थे। जब उन्हों ने बड़े गहरे दिल से शब्द निकाल कर ऊंचे स्वरसे परमात्मा को सम्बोधन करके कहा, "हे सारे जहान के मालिक! हम तेरे दरवाज़े मे यहां भिक्षा माँगते है कि हम मिले रहें। जुदा न हों। "हम" शब्द में ही हिन्दु और मुसलमान मिल गये हैं "है" से हिन्दु और "म" से मुसलमान। हम कहने से हिन्दु मुसलमान सदा अपने दोनों को मिला हुआ समझा करें। इतना ऊँचा एक ही आसमान, एक ही जमीन इस में रहने वाले हम कैसे जुदा हो सकते हैं। हे जगदीश्वर! हिन्दु मुसलमानों का यह दृश्य जो तूने दिल्ली में दिखाया है सारे भारत में हो! यह नेत्र इस दृश्य को देखकर तृप्त होगये। हिन्दुओ और मुसलमानों! आज तुम खुदा के घर में बैठ कर अपने दिल साफ़ कर के मेरे साथ मिलकर कहो कि हम दोनों क़ौमें आज से एक हैं और दुनियाँ की कोई ताक़त हमें अलग नहीं कर सकती।"

लोगों ने "आमीन कहा! वैसा उपदेश भारत में कभी किसी ने न दिया और न शायद कभी कोई दे सके! वह दृश्य संसार में न कभी किसी ने उस से पहले देखा और न कभी

कोई देखे ! एक हज़ार साल के अन्दर वह पहला ही दृश्य था ! और सृष्टि के अन्त तक शायद वह अन्तिम ही दृश्य कहाये !

लोग हज़ार ज़बानों से भी स्वामी जी की तारीफ़ करते नहीं थकते थे। स्वामी जी के उपदेश में कितनी ही बार सब रोये, कितनी ही बार उत्तेजित हुये, कितनी ही बार गंभीर हो गये और कितनी ही बार लोग मूर्छित से हो गये। वह अमृत था, उस में मिठास था, जीवन था ! मुर्दादिल लोग उस दिन जवानों से बढ़कर वीर बन गये। ख़ूंख़ार लड़ाके नरम पड़ गये ! विचित्र उपदेश था। जिस में जो कमी थी स्वामी जी के उपदेश से वह उस में दूर हो गई। वह जवाहरात और रत्नों के चूर्ण की स्याही बना कर, अमृत के घोल से मिला-कर सोने की क़लम से वसुधरा की छाती पर भगवती शारदा के हाथों द्वारा लिखने योग्य था। मनुष्य उसे लिख ही नहीं सकता !

उस दिन जामामसजिद के उपदेश सुनने वाले धन्य हो गये। उसी दिन जामामसजिद पवित्र हो गई ! और सन्यासी का कर्त्तव्य इस संसार में सब से बढ़कर पूरा हो गया। दिल्ली की जामामसजिद का वह दिन भारत के इतिहास में एक अमर घटना हो गई।

तृतीय परिच्छेद

पंजाब में मार्शल ला का दौर दौरा अभी समाप्त ही हुआ था कि सब से पहले स्वामी श्रद्धानन्द जी पंजाब में पहुंचे। परिचित और भक्त लोग स्वामी जी को अपने घर पर ठहराने से डरते थे। वे पहले ही पत्र लिख देते कि 'स्वामी जी हमारे मकान पर कृपा करके न ठहरें, नहीं तो गवर्नमेन्ट हमें सतायेगी। स्वामी जी धर्मशाला में, कभी किसी और गुमनाम जगह ठहर कर काम करने लगे। उनकी सहायता का हाथ सभी के लिये खुला हुआ था। जिस पर अत्याचार हुआ था उसी घर में स्वामी जी ढूंढ कर पहुंचने लगे! धीरे २ घबराये और डरे हुए लोग आशान्वित हुए कि हमारा भी दुःख में कोई सहायक है।

सैंकड़ों मातायें पुत्रहीना, सैंकड़ों विधवायें पतिहीना. सैंकड़ों बालक अनाथ, लोगों से रहित कुटम्ब और मित्रों से हीन मित्र इन मार्शल ला के कुछ ही दिनों में हो गये। अनेक नर नारी गोली के घाट उतारे गये। अनेक जेल में ठोंस दिये गये। अनेक काले पानी की हवा खाने गये, अनेक पेट के बल चलाये गये। जो कुछ पशुओं से सलूक होता था वह मनुष्यों से भी हुआ! जलयाँ वाले बाग़ में हिन्दू मुसलमान, पुरुष स्त्री, बच्चे, का नहीं २ पशुओं तक का खून एक साथ बहा! बृटिश गवर्नमेंन्ट ने पूरा न्याय करके दिखाया कि हमारे राज्य में सब जीव धारियों के साथ एक समान बर्त्ताव होता है!

चाहे पशु हो चाहे मनुष्य. हैं तो जीवधारी । राजा का धर्म है जीवधारियों से समान न्याय हो । ब्रिटिश न्याय की उन दिनों में धूम मचगई थी ।

धीरे २ पंजाब में पं० मोतीलाल नेहरु, पं० मदनमोहन मालवीय जी महात्मा गाँधी भी पधारे । घर २ जाकर इन्हों ने सिसकती विधवाओं को धैर्य्य दिया, पुत्रहीना माताओं को आश्वास न दिया । नवयुवकों को वीर बनने का उपदेश दिया । धन से, अन्न से, जन से सब की सहायता की गई । लोग धीरे २ निर्भय होने लगे काँग्रेस के कमीशन ने सब का हाल हस्तगत करके गवर्नमेन्ट की पोल खोल दी । पं० मोतीलाल नेहरू ने हज़ारों रुपया जेब से खर्च कर पार्लियामेंट में तार दी । क़ैदियों के केस दुबारा सुने जाने लगे । अखबारों में लेख निकले । पं० मालवीय जी ने एसेम्बली में चार २ घण्टे की वक्तृतायें ऐसी दिल हिला देने वाली हैं कि होममेम्बर भी पिघल गया, उसने उठकर मालवीय जी से कहा --पण्डित जी ! आप कृपा करके घटनाएँ सुनाते जाँय, परन्तु हमारे दिल को अपील न करें । आख़िर हम भी मनुष्य हैं । कौन ऐसा दिल है जो इन बातों से ही न रो रहा हो, इस पर आप की अपील तो हृदय के आँसुओं को खींच कर बाहिर निकाल देती है, कृपा कर के दिल को अपील न करें ।"

धीरे २ पंजाब के लोगों का भी आत्माभिमान जागा ! काँग्रेस अमृतसर में होने वाली थी ! डरते हुए पंजाबियों ने

निडर स्वामी श्रद्धानन्द को काँग्रेस स्वागत कारिणी सभा का सभापति चुनलिया। धीरे २ सारा देश अमृतसर में इकट्ठा हो गया। अनेक देश के लीडर क़ैदी छोड़ दिये गये ठीक काँग्रेस के दिनों में मौलाना शौक़तअली, मुहम्मदअली, लाला हरकिशन-लाल आदि जेल से छोड़े गये। अमृतसर के बाज़ारों में बड़े भारी २ इश्तहार लगे। मामूली सभा के नहीं, गवर्मेन्ट पंजाब के नहीं, वायसराय के नहीं, हाँ हाँ, सात समुद्र पार बैठे हुए सम्राट जार्ज के। उनमें लिखा था—"पिछले अत्याचारों को भूल जाओ, अब शान्ति रक्षा करो। गवर्मेन्ट तुम्हारी माता पिता है और तुम इस के बच्चे हो, रियाया हो, मिल-कर रहो। दुखियों के परिवारों से मैं सहानुभूति भेजता हूं। मेरे नाम पर-खुदा के नाम पर मिलके रहो, शान्ति रक्खो!"

साथ ही कुछ अधिकार भारतियों को दे दिये जाने का भी उसी में प्रसन्नतापूर्वक उल्लेख किया गया था। लोगों ने इन इश्तिहारों को किस दृष्टि से देखा पता नहीं। इतना मालूम है कि एक वक्ता ने भी काँग्रेस के प्लेटफ़ार्म से इस घोषणा का हाँ! सम्राट् की घोषणा का, वर्णन तक न किया। शायद विधवाओं, अनाथों तथा अन्य मार्शललॉ के अत्याचार पीड़ितों ने कुछ आश्वासन उस से पाया हो। परन्तु किसी भी अख़बार में नहीं निकला कि ऐसी विधवाओं तथा अत्याचार पीड़ित लोगों ने अपनी राजभक्ति का कोई प्रस्ताव पास कर के सम्राट के पास भेजा हो। हाँ प्रत्येक देश प्रेमी ने जलयाँवाले बाग़ की खून भरी मिट्टी को सिर भी अवश्य झुकाया और डब्बी में भर २ कर ले भी गये।

अस्तु-काँग्रेसी लोकमान्य तिलक वृद्ध भीष्म के समान गरजे, वृद्धा ब्रह्मचारिणी बेसेंट भी चिल्लाईं, बंगाली और

मद्रासी तो आपे से बाहिर हो गये। तिलक महाराज असहयोग करने के पक्ष में थे। महात्मा गाँधी सहयोग के! सभी लीडर गवर्मेन्ट से दो २ हाथ करने पर उतारू थे पर महात्मा गाँधी गवर्मेन्ट को धन्यवाद का प्रस्ताव लेकर उठे। आश्चर्य, उन का अनुमोदन करने को स्वामी श्रद्धानन्द उठे। स्वामी जी बोलेः—

आर्य जाति ने अपना मन दुःख की अवस्था में भी नहीं खोया। इस धन्यवाद के भाव को न खोना। धन्यवाद देना गौरव सूचक है। इस समय यही उचित है। जो स्वराज्य की किश्त दी गई है, वह चाहे तुम्हारा कुछ उपकार न करे, पर धन्यवाद देने से मत चूको।

प्रस्ताव पास हो गया। गवर्मेन्ट से सहयोग भी हो गया। पर थोड़े ही दिनों बाद महात्मा गाँधी गवर्मेन्ट से बिगड़ गये। सारा भारत असहयोगमय होगया। पंजाबी वीर जागे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने महाराष्ट्र की ओर सब से पहला व्याख्यान में खुले तौर से कहा कि—"बम चलाने वालों का मैं समर्थन करूंगा! इस शान्त भारत में बम चलाना सिखाया किसने? खुद अंग्रेज़ों ने! अब उन को षडयन्त्रकारी, बाग़ी बताया जाता है! उन का कुछ क़सूर नहीं!"

लोगों ने समझा अब स्वामी जी क़ैद किये जायेंगे! पर गवर्मेन्ट ने कुछ न कहा! महात्मा गाँधी ने प्रिंसआफ़वेल्स का बाय काट भारत भर में करा दिया, गवर्मेंट मुंह ताकती रह गई। गवर्मेंट को भारत के निश्शस्त्र प्राणियों की शक्ति दिखाने के लिये बारडोली को चुन लिया गया और सेनापति स्वामी श्रद्धानन्द जी को बनाया गया। पर चौराचौरी की घटना ने महात्मा का मन गिरा दिया। स्वामी जी ने बहुत संभाला पर वे न संभले! दिल तोड़ दिया। स्वामी जी भी

महात्मा जी की इस अहिंसा से घबरा गये। वे दिल्ली चले आये। सारा भारत बारडोली की भूल से जीवन शून्य हो गया। बिना प्रोग्राम के लोग मुंह देखते रह गये! पच्चीस वर्ष का युवक देश महात्मा जी ने एक पल भर में अस्सी साल का बूढ़ा बना दिया।

असहयोग आन्दोलन धीरे २ भारत से विदा हो गया! छोड़ गया एक निराशा, क्रोध, दीनता, अकर्मण्यता, आलस्य, ईर्ष्या, द्वेष और गवर्मेण्ट से हार!

[चौथा परिच्छेद]

क्रमशः मालाबार, मुलतान, सहारनपुर के अत्याचार अखबारों में छपे। मुसलमान गुण्डों ने हिन्दुओं का माल असबाब लूटा! मकानों को आग लगा दी, बच्चे जला दिये! स्त्रियों के स्तन काट डाले! पुरुषों के सिर काट डाले हत्या; लूट मार; आग सभी बातें एक साथ करली गईं। पूरा हिन्दु मुस्लिम एक्य होने का दृश्य सब के सामने आगया। जितने हिन्दू मुसलमान बनाये जा सकें बना डाले!

यदि स्वामी श्रद्धानन्द जी जामामस्जिद की जगह किसी गिरजा में बैठ कर वह उपदेश करते तो देश में शायद यह विश्वास घात न किया जाता। बच्चों और स्त्रियों की यह निर्दोष हत्या न की जाती। इस में कुछ कारण है। मुसलमान जाति जिस विधर्मी का सब से अधिक मान कर बैठती है उस का तुरन्त अगले ही दिन प्रायश्चित्त कर देती है। परमात्मा की प्रेरणा से जिस विधर्मी के सामने अपना सिर आज झुका देती है, कल अपने मज़हब के हुक्म के मुताबिक उसे ही काफ़िर कह कर सिर उतारने पर तय्यार हो जाती है। यह मुसलमानों का अपराध नहीं, यह धर्म का अपराध है। धर्म पुस्तक का अपराध है! जिसने सच्ची, विश्वास पात्र; सहन शील, अत्याचार न करनेवाली, बड़ी

सभ्य, शान्त स्वभाव वाली, वचन पालन करने वाली, नाजुक मिजाज़ लड़ाई झगड़े का नाम न जानने वाली और खुदा परस्त जाति देखनी हो, वह इसी भारत में दाढ़ी वाले मुसलमानों को आ के देखले। मुसलमान जाति में एकता, शूरवीरता, धर्म पर प्राण देना, धर्म प्रचार आदि सारे ही गुण हैं। केवल एक ही दुर्गुण है। वह यह कि मुसलमान हिन्दू से उलटा रहता है। बस हिन्दू से उलटा रहना यह मुसलमान जाति का विशेषगुण है। यदि हिन्दु पूर्व को बैठ कर ईश्वर भजन करेंगे तो मुसलमान पश्चिम को। यदि हिन्दु पहले मुंह धोयेंगे तो मुसलमान पैर, यदि हिन्दु ऊपर को मुंह करके सोयेंगे तो मुसलमान नीचे को। यदि हिन्दु स्त्री जाति को सिर झुकायेंगे तो मुसलमान पैर की जूतियों से खातिर करेंगे। यदि हिन्दु लड़ते भिड़ते अलग २ रहेंगे तो मुसलमान एक हो जायेंगे। यदि हिंदु एक हो जाँय तो मुसलमान अलग २ फट जायेंगे। यदि हिन्दु शान्त बन कर रहेंगे तो मुसलमान अशान्त बन जायेंगे और खून खराबी करेंगे। यदि हिन्दु शूर वीर बन जाँय तो मुसलमान दो घड़ी में शान्त बन जायेंगे। यदि हिन्दु धर्म का प्रचार बन्द करदें, तो मुसलमान मज़हबी प्रचार खूब करेंगे। यदि हिन्दु अपने धर्म का प्रचार करें तो मुसलमान अपना प्रचार झट बन्द करदेंगे। यदि हिन्दु अपने को न बढ़ायें तो मुसलमान अपने को बढ़ा लेंगे। यदि हिंदु शुद्धि द्वारा सब को शुद्ध करना आरम्भ करें तो मुसलमान अपनी तबलीग दो घड़ी में बन्द कर देंगे। यदि हिन्दु घटें तो मुसलमान बढ़ेंगे। यदि हिन्दु बढ़ें तो मुसलमान तुरन्त घट जाँयगे। यदि हिन्दु अछूतों से मिलने लगेंगे तो मुसलमान उन से मिलना बन्द कर देंगे।

यह उलटा होने का सिद्धान्त अटल है। यह मज़हब ही की वजह से है। जब जिबराईल साधु वेद के एक सूक्त को अरब में मुहम्मद साहब को सिखाने लगा तो अरबी ज़बान के उच्चारण के कारण प्रत्येक वेद मन्त्र के अक्षर पर "अ" लगाया गया। अरबी ज़बान ऊंटों के समान जब कभी बोलती हुई किसी महा पुरुष से सुनी जाती है तो उस के "अ, यअ, कअ आदि शब्द बड़े ही मीठे लगते हैं वे "क" को "क़अ" करके बोलते हैं। इस कारण "अ" शब्द सब अक्षरों से जुड़ कर नई पुस्तक बन गई जिसका नाम कुरान हुआ। परन्तु "अके" अर्थ संस्कृत में "नहीं" के हैं। बस यही बात 'उलटी' लग गई। अब जब तक हिन्दुस्तान में रह कर हिन्दुओं के वेद का सूक्त लेकर नया कुरान नहीं बनता तब तक पुराने कुरान की यह शिक्षा सदा वेदों के उलटी रहेगी।

यह "उलटा रहने का सिद्धान्त" पृथ्वीराज ने भी समझ लिया था उसने मुहम्मद गौरी को ११ बार क्षमा किया। बारहवीं बार मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज को क्षमा से ठीक उलटा प्राणबध का दण्ड देना चाहा। पर तब पृथ्वीराज ने इस बात को समझ लिया। और इस "उलटे" को समझ कर झट मुहम्मद गोरी को शब्द वेधीवान का दृश्य दिखाने के लालच में उलटा वाण मारा और अपने प्राण छोड़ने से पूर्व "उलटेपन" का नाश कर दिया। इसी प्रकार जोधपुर के जसवंतसिंह ने भी इस उलटेपन के सिद्धान्त को झूठ समझ लिया तभी वह औरंगज़ेब से दक्खिन भेजे जाने पर शिवाजी से जा मिला। शिवाजी और गुरू गोबिन्द सिंह तो इसे आरम्भ से ही समझते थे। इस बीसवीं शताब्दि में यह सिद्धान्त लगभग सारे भूल गये थे। केवल एक ही जाति ने यह सिद्धान्त

नहीं भुलाया। 'अ' का अर्थ उलटने को उस जाति ने अपने नाम के साथ एक और 'अ' लगा दिया 'आ' जिस का अर्थ हुआ 'अ' का उलटा। तो 'अ—अ' 'उलटे का उलटा' मिल कर 'आर्य्य' जाति बन गई। इस आर्य जाति ने संस्कृत जानने के कारण 'उलटों का कारण' 'अ' को क्या समझा बस मुसलमान जाति को सीधा करने का भेद समझ लिया वह तभी सचेत हो गई थी जब घने मेल के दिनों में मालाबार काण्ड हो गया।

आर्य जाति के लीडरों में से सब से अधिक स्वामी श्रद्धानंद जी ने इस "उलटपन" को समझ लिया। उन्हों ने भी इस जाति के सुधार के लिये इन के साथ एक और "अ" जोड़ देने का निश्चय कर लिया। बस 'अ' के साथ 'अ' और जोड़ना अर्थात् चोटी रखना शुरू हुआ कि 'उलटे' सीधे होने आरम्भ हो गये। हिन्दु बढ़े तो मुसलमान घटे! हिन्दुओं को संगठित कर दिया, तो मुसलमानों की एकता भागी, आपस में ही लड़ने झगड़ने लगपड़े। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इतनी जल्दी इस सिद्धान्त को समझ कर इसका ठीक उपाय निकाला जो आज तक किसी ने इतनी स्पष्टता से नहीं निकाला था। बस 'शुद्धि' और 'संगठन'। दो ही बातों ने मुसलमानों की सट्टी पट्टी भुलादी। धड़ाधड़ मुसलमान हिन्दु होने लगे। माला-बार और कोहाट की जगह हिन्दुओं ने भारत के सब से बड़े नगर में इकट्ठा ही बदला ले लिया। ऐसी वीरता दिखाई कि भगोड़ों को भागने की जगह भी न मिली। कलकत्ते में ही बोरिया बन्धना बाँधकर भाग खड़े हुये। ठीक उलटेपन का इलाज कलकत्ते में हुआ। पहले हर जगह मन्दिर तोड़े जाते थे तो कलकत्ते में मसजिदें तोड़ी गईं। परिणाम स्वभा-

निक उलटा होना ही था अर्थात् मन्दिर बच गये। जो कुछ हुआ कलकत्ते में उलटा हुआ। बस सब सीधे हो गये। तब से भारत में अधिक शान्ति दीखने लगी। हिन्दुओं ने इलाज निकाल लिया और मुसलमानों ने भी उसे मान लिया। स्वामी श्रद्धानन्द के निकाले हुये एक ही महान आविष्कार से हिन्दू भी बढ़ने लगे और मुसलमान भी घटने लगे। दोनों जातियां ने स्वामी श्रद्धानन्द को लीडर माना। एक ने अपनी रक्षा के कारण दूसरों ने अपने विनाश के कारण। दोनों की आँखें स्वामीजी पर हर समय गड़ी रहती थीं। एक की प्रेम के कारण, दूसरी की द्वेष के कारण।

जो श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के "इस महादान को पाकर सीधा हो गया उसका उलटापन भागा। भारत में इस उलटपन का नाश करनेके लिये स्वामी जी का नाम अमर हो चुका है उपाय ऐसी तत्व दृष्टि से निकाला गया है कि कि शतसहस्र जिह्वाओं से भी प्रशंसा नहीं हो सकती। "शुद्धि और संगठन" का नाम सुना कि मुसलमान कपड़ों से बाहिर हुये। शुद्धि के नाम से उनका सिर चकरा जाता है, दिन को तारे दीखने लगने हैं, और पैरों तले की मिट्टी निकल जाती है और संगठन के नाम से छाती पर साँप लोट जाता है।

शुद्धि और संगठन इन शब्दों का प्रचार आर्य जाति को अमर बना देगा। कैसा सहज उपाय है। शुद्धि की, और मुसलमानी भागी 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसरी'। शुद्धि का सुदर्शन चक्र चला कि फिर भारत में शान्ति ही शान्ति होगी।

लो! हिन्दुओं! इस अमोघ अस्त्र को अपने २ हाथ में पकड़ लो। राम और कृष्ण अर्जुन और भीम के अस्त्र तो अब मिलने से रहे। यही दो अस्त्र काफ़ी हैं। बस फिर राम राज्य ही होगा।

जो सन्यासी के दिये ये दो महास्त्र तुमने भुला दिये तो तुम्हारा नाम लेवा और पानी देवा भी कोई न रहेगा और यही हिन्दुस्तान इस्लामिस्तान बन जायेगा। बोलो इसे इस्लामिस्तान बनाओगे या हिन्दोस्तान ? सच है हिन्दोस्तान, तो बस शुद्धि करो ॥

(पाँचवाँ परिच्छेद)

२३ दिसम्बर १९२६ को इस देश के सच्चे सन्यासी का एक प्रमत्त मुसलमान ने बलिदान कर दिया ! २५ दिसम्बर को अरथी इतनी धूम से निकली कि किसी सम्राटकी अरथी भी ऐसे न निकली होगी । औरंगज़ेब की मुसलमान दिल्ली इतने हिन्दुओं से उस दिन भर गई थी कि मानों उस दिन दिल्ली में मुसलमान ही नहीं रहे थे। लाखों का जनसमूह, सन्यासी, बनस्थी, गृहस्थी, ब्रह्मचारी सभी नंगे सिर नंगे पाँव अरथी के साथ जा रहे थे। दिल्ली उस दिन सहमी हुई थी, शाप खाये हुई थी। नीचों ने सन्यासी की छाती पर भी खून लगा दिया ! मुसलमानों ने जिसे खुद मसजिद की वेदि पर चढ़ाया उसे स्वयं आज बलि वेदी पर चढ़ा दिया।

मुसलमानों ! कायरो ! श्रद्धानन्द की उसे अरथी समझते हो वह बैंड बाजे के साथ क्षत्रिय की विजययात्रा थी, संसार के संचित पुण्य का महाप्रस्थान था, देवताओं को वरदान का साकार गमन था, वैदिक धर्म के सूर्य का दिव्य प्रयाण था। हिन्दुओं की आशा के बृहद्देवता का महाविसर्जन था। वह सभ्य संसार का तेज, ओज, वीरता निर्भयता दृढ़ता, कर्मण्यता सत्य और प्रेम का अटूट प्रवाह था। भक्तोंकी भक्ति, वीरों की शक्ति, दीनों की आह, विधवाओं का आर्त्तनाद; साधु जनो की सत्संगति योगियों की अहिंसा, बच्चों की सरलता

और राजपुरुषों की नीति का एक समारोह था। वह जगज्जननी का महाआदान था और वीर सन्यासी का महाबलिदान था।

भारत माता! तेरे हृदय में यवन की गोली चल गई है। क्या तू महा प्रलय से पूर्व इसे भूल जायगी?

[छठा परिच्छेद]

दिल्ली के चीफ़ कमिश्नर, डिप्डी कमिश्नर, सी० आई० डी० के बड़े अफ़सर सभी लोग वायसराय के निमन्त्रण पर एकत्रत हुए हैं। भूतपूर्व प्रधान मंत्री एम्जेमैकडानल्ड ने श्रद्धानन्द जी के बलिदान का विस्तृत समाचार विलायत भेजने को वायसराय को तार दिया है। उस में यह भी लिखा है —

"स्वामी जी क्राईस्ट की पूर्णप्रति मूर्त्ति थे। पार्लियामेंट की दीवारों को अपनी वक्तृता से गुंजादेने वाला मैं भी जब स्वामी जी के सामने गुरुकुल में बोलने खड़ा हुआ था तो अपनी सारी वाग्यिता भूल गया था। शोक ऐसे देवता का भी प्राण लेलिया गया।

वायसराय ने कमिश्नर से सब बातें पूछ कर तार का जवाब देदिया। शेष में कुछ देर स्वामी जी के विषय में निम्न प्रकार बातें हुई।

वायसराय —मैं समझता हूं स्वामी जी धर्म के आचार्य थे, वे प्रायः राजनीति से अलग रहते थे।

चीफ़० क०-नहीं हुजूर! राजनीति में तो वे इङ्गलैन्ड के राजनीतिज्ञों के भी गुरू बनने योग्य थे।

वायसराय-हैं! ऐसा है?

ची० क०-जी हाँ! बिल्कुल सच है! आप को एक ही घटना सुनाता हूँ, उस से आप स्वयं जान सकेंगे कि वे हमारे धोखे में

कभी नहीं आने वाले थे। मैंने जब देखा कि हिन्दु मुसलमान दिल्ली में हमारी परवाह न कर के स्वामी का ही कहना मानने लगे हैं। और सर्वत्र राज्य प्रबन्ध तितर बितर हो रहा है। पुलिस तथा फ़ौज को भी बिगाड़ने के यत्न किये जा रहे हैं तो मैंने यही उचित समझा कि इन सब बातों की जड़ स्वामी जी ही हैं, उन्हें ही किसी ढंग से क़ैद किया जाये। यह सोच कर एक दिन मैंने सी० आई० डी० के एक अफ़सर को जो मुसलमान था साथ लिया। और दोनों ने भेष बदल कर स्वामी जी के मकान में रात को साढ़े दस बजे प्रवेश किया। मैं बुर्क़ा ओढ़कर औरत बन कर गया और साथी काबुली अमीर बन कर गया। हमने स्वामी जी को जाकर देखा कि वे उस समय प्रभू से प्रार्थना कर रहे थे। बातों में लाकर हमने उन से फौज के नाम अंग्रेज़ों को एक रात में काट डालने का हुक्म लिखाने का बहुत ही सिर तोड़ यत्न किया। फौज के नकली अफ़सरों के दस्तख़तों वाला रुक्का भी उन को भुलाने के लिये दिखाया। पर वे ऐसे होशियार निकले कि हमें दो चार मिनट में ही भाँप गये। हमारा रुक्का भी आपने क़ाबू कर लिया और हमें उलटा लिख कर फंसाने लायक़ बना दिया।

वायसराय—क्या २ लिखा।

ची०क०—लिखा था।

"तुम दोनों कोई सी० आई० डी० के बड़े अफ़सर मालूम होते हो। स्मरण रखो! सीधे साधे देशवासियों या लीडरों के फंसाने के उपाय परिणाम में तुम्हें ही भुगतने पड़ेंगे।"

वायसराय-ओहो! गजब कर दिया। तो तुम्हारा भेद कैसे पता लग गया है?

चौ० क०-क्या जाने हुजूर ! उनके पास केवल नौकर धर्म सिंह और प्राइवेट सेक्रेटरी स्नातक धर्मपाल दो आदमी गज़ब के हैं दूसरे दिन दस बजे सुबह मेरे नाम स्वामीजी का एक बन्द लिफ़ाफ़ा आया उस में लिखा था कि " आप के शौहर ने जो आज मुझे दिल्ली का राज्य देना था वह आप को सौंपता हूं। सन्यासी राज किया नहीं करते। राज दिया करते हैं।"

वायसराय-भई, हद्द हो गई ! क्या सी० आई० डी० के अफ़सर का नाम भी लिखा था ?"

चौ० क०-जी हाँ, मुझे ही उसका नाम भी लिख भेजा था अभी तो कितनी ही बातें हैं। आप एकसे ही आश्चर्य्य न करें। सुनिये-मार्शललॉ के बाद पंजाब की सी०आई०डी०सिर पटक के मर गई पर स्वामी जी के पास से मार्शल ला के पीड़ितों की रिपोर्ट न निकाल सकी। उन्होंने उसी के बल पर तो मोतीलालनेहरू से तारें दिलवाकर पार्लियामेन्ट और सम्राट से घोषणा निकलवाकर सभी कैदियों को छुड़ा दिया था। ऐसी बात को गुप्त रखने वाला राजनैतिक नेता क्या आपने कभी इंगलैन्ड में भी सुना है ?

वायसराय-आख़िर वे काग़ज़ात कहीं तो रखते होंगे।

चौ० क०-हुजूर उन के जीवन तक तो पता न चला अब उनके मरने पर भेद खुला है कि वे अपनी कमर से बांधे रखते थे। हमने काँग्रेस कमीशन में भी अपना एक बैरिष्टर मार्शल ला के कागजात उड़ाने को प्रविष्ट कराना चाहा था। उसने पं०मालवीय को नेहरू को और सब को क़ाबू कर अपना नाम कमीशन में लिखवा लिया था पर स्वामी ने मालवीय को समझा बुझाकर उसे ऐसे बाहिर निकाल दिया जैसे दूध में से मक्खी या मक्खन में से बाल।

वायसराय-तब तो स्वामीश्रद्धानन्द एकभारी राजनीतिज्ञ थे

चीο कο-सच तो यह है कि निःस्वार्थ देश सेवा करने वाले लीडरों में स्वामी श्रद्धानन्द सा लीडर मैंने और कोई नहीं देखा।

वायसराय-मैं तो हैरान हूं कि पार्लियामेंट के मैम्बर प्रधान, मंत्री अमरीका योरुप, अफ्रीका, सुमात्रा, जावा, हिन्दुस्तान के मुसलमान सिक्ख हिन्दु, पारसी, ईसाई, अमीर, दरिद्र, स्वराजिष्ट, कम्यूनिष्ट, सभी लोग स्वामी के मातम में प्रस्ताव और तारों पर तारें भेज रहे हैं? केवल एक सम्राट ही बचे हैं।

चीο कο हुजूर? यदि मिष्टर गाँधी प्रिंसआफ वेलज़ की वांयकाट न कराते तो स्वामी श्रद्धानन्द उन्हें गुरुकुल जरूर लेजाते और जो गुरुकुल एक वार हो आया वह सदा के लिये स्वामीश्रद्धानन्दकाभक्त और गुरुकुलका खैरखाहबनगया। गुरुकुल स्वामी श्रद्धानन्द का प्राण है। एण्ड्रयूज़, लार्ड मेस्टन भूतपूर्व वायसराय 'लार्ड चेम्सफोर्ड. लार्ड इस लिंगटन, रेम्ज़े मेकडानल्ड सब गुरुकुल हो आये हैं और वहीं के सदागीत गाया करते हैं। यह तार इसी बात का परिणाम है।

वायसराय-तब तो स्वामी श्रद्धानन्द को जानने के लिये गुरुकुल का जानना जरूरी है। मैं कोशिश करूंगा कि उस महान स्वामी के प्यारे गुरुकुल को देखूं॥

डिप्टी कमिश्नर—हजूर! सुना है कि स्वामी जी के प्यारे इन्स्टिट्यूशन की १६ मार्च १६२७ को गुरुकुल भूमि में ही सिल्वर जुबिली मनाई जावेगी। आप इस महोत्सव पर वहाँ ज़रूर पधारें नहीं तो गुरुकुल वासियों को कोई सन्देशा ही भेज दीजिये। इसी ढंग से गुरुकुल के ब्रह्मचारी राजा भक्त बनेंगे। लार्ड हार्डिंग ने भी अपना प्रेम सन्देशा ब्रह्मचारियों को भेजा था।

वायसराय यह तो स्वामी जी की मृत्यु पर शोक प्रकाशित करने का महान सुअवसर आपने मुझे बताया। थैंक्यू।

इसके बाद सब लोग विदा हुए। वायसराय ने निम्न लिखित संदेशा तार द्वारा गुरुकुल के आचार्य के नाम भेजाः—

आचार्य महोदय !

गुरुकुल के प्रिय ब्रह्मचारियों को मेरी ओर से यह सन्देश है कि आप के पूज्य कुलपति श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी संसार से विदा होते समय आपको अपने सारे प्रोग्रामों का एक मात्र उत्तराधिकारी बना गये हैं। मैं विश्वास दिलाता हूं कि भारत सरकार की इस बातमें पूर्ण सहानुभूति हैं कि स्वामी जी की यह प्रिय धार्मिक संस्था दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करे। मुझे पूरी आशा है कि गुरुकुल से निकले हुये ब्रह्मचारी ही सच्चे देशभक्त, राजभक्त, संसार का और भारत के कल्याण करने वाले नागरिक होंगे। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जैसे सर्व गुणसम्पन्न नवयुवक गुरुकुल से उत्पन्न हों यह मेरी सदा मङ्गल कामना है।

शुभाकाङ्क्षीः—
लार्ड इरविन
गवर्नर जनरल आफ़ इण्डिया

बारवां परिच्छेद

गुरुकुल की अति पवित्र भूमिपर गंगा के किनारे खुले मैदान में सभा लगी है। सभी ब्रह्मचारी अध्यापक उपाध्याय तथा कर्मचारी वहाँ उपस्थित हैं। श्रीमान आचार्य जीने सभा पति की कुरसी से वायसराय का गंभीर सन्देश सुना दिया है। स्वामी जी के जीवन पर अनेक उत्तम २ व्याख्यान उपाध्याय, अध्यापक तथा ब्रह्मचारियों ने दिये। सब का सार दो शब्दोंमें

स्वामी जी के वचनों द्वारा ही यों कहा जा सकता है। "भारत-
"वासियों के पास दो अमूल्य वस्तुएं थी। एक जीना' दूसरा
मरना" दक्षिण अफ्रीकाके भारत वासियोंने यह दिखा दिया कि
अब भी भारत वासी इस प्रकार हंसते २ मरा करते हैं। पुत्रो !
तुम ने संसार को दोनों बातें दिखानी हैं कि भारतवासीयों
जिया करते हैं और इसप्रकार मरा करते हैं।

उपरोक्त सन्देश श्रीस्वामी श्रद्धानन्दजी ने, दक्षिण
अफ्रीका के सत्याग्रही भाइयों की सहायता के लिये मजदूरी
करने को जाते हुएब्रह्मचारियों को गुरुकुल विशाल पुस्तकालय में
को दिया था। वही सन्देश अब भी ब्रह्मचारियों के लिये है।
आचार्य रामदेव जी ने कहाः–स्वामी जी ने दोनों यह बातें अपने
जीवन में घटाकर दिखाईं। वे जीना भी जानते थे और मरना
भी। स्वामी जी जैसे संसार के सच्चे शुभचिन्तक सन्यासी थे
वैसे ही सच्चे भारतीय नागरिक थे। प्रिय ब्रह्मचारियो ! स्वामी
जी के समान जीवन और मरण दोनों को अपने जीवन में
घटाने वाले तुम बनो। यही स्वामी जी का कुलपति जी का
दिव्य सन्देश है, कि सच्चे भारतीय नागरिक बनो।"

सभा विसर्जन हुई। इस सभा में कोई संगीत न हुआ।
आश्चर्य था कि संगीत के प्रेमी ब्रह्मचारी और स्नातक बार २
प्रेरणाकिये जाने पर भी न गाये। केवल मात्र एक गीत जो पढ़
कर ही सुनाया गया, सब ब्रह्मचारी सभा का अन्तिम प्रसाद
और अपने सच्चे भावों का एक मात्र निदर्शन समझ उसे सदा
गुरुकुलमें गाने लगे। वह गीत नीचे नक़ल किया जाता है उस
पर लिखा हुआ साथ ही नोट भी लिखा जाता है।

नोटः–आज गाना सुनने वाले नहीं रहे। इस लिये कौन
गाये। वसन्त की ऋतु भी है, पौधे भी हैं, गुरुकुल की वाटिका

भी हरीभरी है कोयल भी है पर वाटिका का पुराना माली नहीं है कोयल का कूकना आज से वाटिका में बन्द रहेगा। इस गीत को पढ़ कर सुना दिया जाये, गाया न जाये।

एक दुःखी
संगीत प्रेमी स्नातक

* गीत *

१-अब वक्त है हमारा कुछ कर दिखायेंगे हम।
स्वामी का नाम दिल से यों ना भुलायेंगे हम ॥१॥
२-आयेंगी आफ़तें जो सहलेंगे उनको हरदम।
सीने पै गोलियाँ भी हंसर के खायेंगे हम ॥ २ ॥
३-कातिल करे जो हमला हम पर, कहेंगे डटकर।
आ क़तल करले बुज़दिल. सीना बढ़ायेंगे हम ॥३॥
४ दिल में भरा हमारे जोशे जवानी जो है।
शुद्धि के जंग में वह पूरा दिखायेंगे हम ॥ ४ ॥
५ जालिम करेंगे हमला स्वामी सा फिर जो हम पर।
क़ातिलको माफ़करके खुद स्वर्ग जायेंगे हम ॥५॥
६-क्या तीर तेग़ में हैं, गोली में क्या है शक्ति।
इस वीर क़ौम का भी जौहर दिखायेंगे हम ॥ ६॥
७ आशिक़ बने हैं जिस के वह वेद धर्म प्यारा।
तुम जुल्म करना उसपर उसको बचायेंगे हम॥७॥
८-क़ातिल ! बहिश्त तुमको गर मिल गया कुरां से।
ऐसे कुराँ को फ़ौरन झूठा बतायेंगे हम ॥ ८ ॥

९-उस ज़िस्म को जला कर होंगे न चुप ज़रा भी।

डंके की चोट समझो शुद्धि चलायेंगे हम ॥ ९ ॥

१०-क़ातिल ! रहो न ग़ाफ़िल तुम भी बनोगे हिन्दू।

गायत्रि मन्त्र तुम से, देखो पढ़ायेंगे हम ॥ १० ॥

११-गङ्गा के इस तरफ़ से धारा चली जो उस में।

दीने मुहम्मदी का बेड़ा डुबायेंगे हम ॥ ११ ॥

१२-स्वामी की लाश से जो शोले उठे चिता पर।

इस्लाम की चिता को उन से जलायेंगे हम ॥१२॥

१३ सोये पड़े थे अब तक इस क़ौम के जो लीडर।

स्वामी के खूं से उनका योद्धा बनायेंगे हम ॥१३॥

१४-अफ़सोस ! आख़री वह दर्शन हुआ न हम को।

सीने को रात दिन बस अपने जलायेंगे हम ॥१४॥

१५-"मोहन" दिखा के अपनी छवि छिप गये कहाँ हो।

आचार्य ! दर्शनों को फिर से बुलायेंगे हम ॥१५॥

('स्वामिन् ! तुम्हें तो फिर से जग में बुलायेंगे हम ॥१६

"सब ब्रह्मचारियों को उसी रात प्रातः के ३ बजे स्वप्न हुआ स्वामी श्रद्धानन्द जी आकाश से पुष्पों के बिमान पर बैठे यह कह रहे हैं:-

मेरे पुत्रो, ब्रह्मचारियो ! मैं सब सुनता रहा हूं। निश्चय रक्खो मैं फिर भारत में जन्म लेकर इसी गुरुकुल से ब्रह्मचारी बन कर संसार का कल्याण करने शीघ्र आ रहा हूं।"

"राजेश्वरी"

यह सुन्दर, सुस्वादु, रसायन-औषध राजयक्ष्मा अर्थात् तपेदिक के रोगियों के लिये प्राणदायक सिद्ध हुईहै। राजेश्वरी मीठा है। इसे बच्चे बूढे जवान स्त्री तथा पुरुष सभी आनन्द से खाते हैं।

खांसी

खाँसी चाहे कैसी भी हो 'राजेश्वरी' अवश्य दूर कर देगी। सूखी खाँसी हो या तर हो, हरा पीला कफ निकलता हो, मुंह से खून निकलता हो, दमा हो, जुक़ाम रहता हो, फेफड़े के अन्दर घाव होकर मुंह से पीप खून थूक के साथ निकलते हों। शरीर का मांस सूख कर हड्डियों का ढ़ेर रह गया हो। भूख न हो, छाती में दर्द रहता हो, ज्वर हो, तथा अन्यान्य

तपेदिक

के सारे उपद्रव हों और रोगी जीवन से निराश होकर यमराज के घर की तैयारी कर चुका हो तो भी 'राजेश्वरी' के सेवन से चमत्कार होते देखा है। शरीर फिर हरा भरा हो गया है। तपेदिक और खांसी जड़मूल से नष्ट हो गई है अनेक

राजा महाराजा

इसके सेवन से लाभ उठाकर हमें प्रशंसा पत्र दे चुके हैं। अधिक क्या सैंकड़ों औषध करने के बाद भी जब लाभ न हुआ तो राजेश्वरी ने ही हमारे अपने

प्राण बचाये

थे। वर्षों परीक्षा करके इस दुर्लभ औषध को राजयक्ष्मा तथा खाँसी श्वास से पीड़ित रोगियों के लिये आज पहलीबार विज्ञापन में प्रकाशित किया जाता है। जो सज्जन लाभ उठाना चाहें औषधालय से मंगालें।

दाम-आध पाव का डिब्बा ४) और १ सेर का डिब्बा ३२)

सूचना

हम सुप्रसिद्ध स्वास्थ्य के स्थान सोलन पर्वत पर वर्षों से राजयक्ष्मा, खाँसी, श्वास, संग्रहणी, पाण्डुरोग, आन्त्रक्षय प्रदर, सूतिकारोग, ज्वर, हिस्टीरिया आदि की चिकित्सा करतेहैं। भारत देश में शिमले के समीप सोलन पहाड़ स्वास्थ्य के अभिलाषी यक्ष्मारोगियों के लिये उत्तम स्थान है। राजयक्ष्मा की ऋषिप्रणीत, अनुभूत तथा निरन्तर खोज और सत्संग से प्राप्त हुई सुदुर्लभ औषधियां हमारे औषधालय से अति उत्कृष्ठ और प्रति वर्ष नई बनी हुई मिलती हैं। उत्तम नया असली अष्टवर्ग सेवना 'च्यवनाप्राश' यहीं आप को मिलेगा ! श्री १०८ महर्षि दयानन्द की लिखित विधि के अनुसार बना अभ्रकभस्म यहां मिलेगा जो क्षय रोग तथा अन्य रोगों की अव्यर्थ महौषध है। अनेक प्रकार के बहुमूल्य रत्न, मोती, धातुओं की भस्म, रस, चूर्ण, अवहेल, आसव, गोली, घृत, तेल आदि २ फलदायक औषध यहां से मिल सकती हैं। हम बिना मास का सेवन कराबे ही यक्ष्मा की चिकित्सा करते हैं। जो सज्जन कोई सम्मति लेना चाहें तो जवाबी कार्ड आने पर यहाँ से सम्मति बिना मूल्य दी जाती है। लम्बे पत्र व्यवहार और घर बैठे चिकित्सा करनी हो तो पेशगी २)भेजने चाहियें। औषधियों के लिये सूचीपत्र मंगायें—

पता :—

कविराज विद्याधर विद्यालङ्कार आयुर्वेदशास्त्री

"यक्ष्माचिकित्सक"

पो० सोलन